राष्ट्रीय सेवा भारती

सेवा दिशा

Sewa Disha

2024

नर सेवा, नारायण सेवा

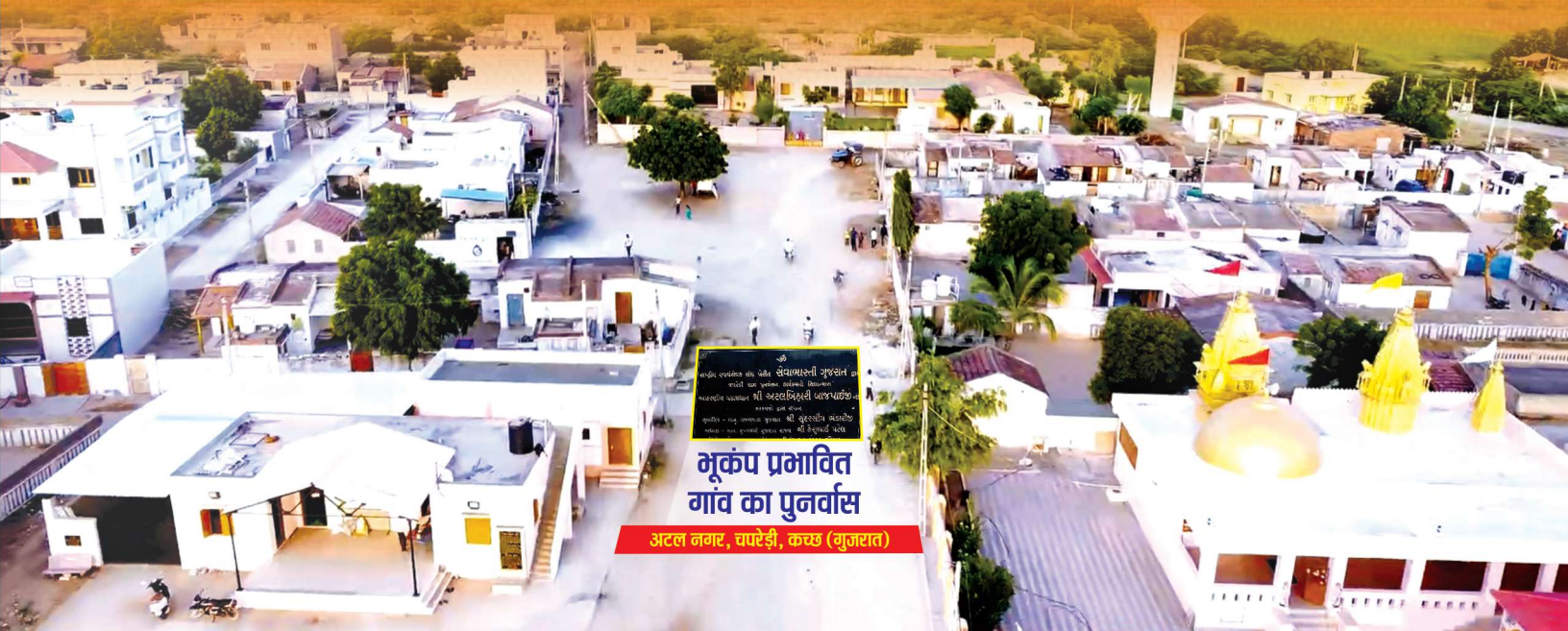

भूकंप प्रभावित गांव का पुनर्वास

अटल नगर, चपरेड़ी, कच्छ (गुजरात)

सेवा दिशा

फाल्गुन शुक्ल षष्ठी, विक्रम संवत् 2080
(15 मार्च 2024)

संरक्षक
श्री पराग अभ्यंकर
श्री पन्नालाल भंसाली

संपादक
उदय सिंह कुन्तल, जयपुर

सम्पादन सहयोग
श्री कृष्ण कुमार, जम्मू
श्री सुमित खानवलकर, इंदौर

प्रकाशक
राष्ट्रीय सेवा भारती

संकलन एवं प्रस्तुति
कार्यालय : राष्ट्रीय सेवा भारती
कार्यालय : सेवा भारती, दिल्ली

संकलन एवं मोबाईल एप निर्माण
Parkhya Solutions Pvt. Ltd. Indore
ई-मेल : sparkhya@gmail.com

पृष्ठ सज्जा
अजीत कुमार झा
सागर कम्प्यूटर, जयपुर

मुद्रण
पि.एम. एण्ड कम्पनी, दिल्ली

प्रशासनिक कार्यालय
राष्ट्रीय सेवा भारती
बी.डी.-37, गली नं. 14,
फैज रोड़, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
चल दूरभाष : 9868245005,
फोन नं. : 011-46523618

ई-मेल :
office@rashtriyasewabharati.org

वेबसाइट :
www.rashtriyasewabharati.org

अनुक्रमणिका

सेवा से स्वाभिमान जागरण
डॉ. मोहनराव भागवत
08

समर्थ भारत की सेवा दिशा
दत्तात्रेय होसबाले
10

समस्या केन्द्रित चिंतन, परिणाम केन्द्रित योजना
सुरेश (भैय्याजी) जोशी
13

अनुक्रमणिका

भूमिका	06
प्रस्तावना	07
❖ राष्ट्रीय सेवा भारती क्षेत्र-प्रान्त रचना	14
❖ प्रान्तशः सेवा कार्य	15
❖ शिक्षा आयाम	16
❖ स्वावलम्बन आयाम	17
❖ क्षेत्र तथा आयामशः सेवा कार्य (ग्राफ)	18
❖ सामाजिक आयाम	19
❖ स्वास्थ्य आयाम	20
❖ छात्रावास : एक अच्छे और सच्चे भारत का निर्माण	21
❖ समृद्ध भारत की समर्थ किशोरी	22
❖ स्वयंसेवकों की 'सेवागाथा'	23
❖ आपदा प्रबंधन	24
❖ मातृ संगठन आयामशः तथा क्षेत्रानुसार सेवा कार्य	26-27
❖ स्थानानुसार सेवा कार्य व्याप	28
❖ सेवा मातृ संगठन परिचय	29-35
❖ राष्ट्रीय सेवा भारती : आयामानुसार सेवाकार्य	36
❖ राष्ट्रीय सेवा भारती : स्थानानुसार सेवाकार्य	37
❖ आयाम तथा सेवाकार्यशः संख्या	38
❖ प्रान्तशः नियमित सेवा कार्य	39
❖ सेवा के उपक्रम	40
❖ देश के प्रकल्पों में कुल सेवित जन	41
❖ सेवा कार्य प्रकार व संख्या (समग्र)	43

शुभकामना संदेश

डॉ. मोहन भागवत

परमपूज्य सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

।। ॐ ।।
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
प्रधान कार्यालय : डॉ. हेडगेवार भवन, महाल नागपुर. 440 032
दूरभाष : 0712 – 2723003, 2720150. Email- sachivalay@sanghngp.org.in
सरसंघचालक : मोहन भागवत सरकार्यवाह : दत्तात्रेय होसबाले

पौष कृ. 12 युगाब्द 5125 07.02.2024

राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा 'सेवा दिशा 2024' पत्रिका का यह प्रकाशन समाज में चल रहे अखिल भारतीय सेवा उपक्रमों का केवल सांख्यिकीय विश्लेषण न होकर सहस्रावधि जनों के घर तक पहुंची नई उषा की सुखद किरणें हैं जो उनके जीवन में स्वाभिमान, उत्थान के मंगल प्रभात की परिचायक है।

राष्ट्र की उन्नति सामान्य जन की प्रगति के बिना अपूर्ण है। सर्वे भवंतु सुखिन: का उद्घोष हमारे कार्य का आधार है। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, संस्कार के चतुष्टय से युक्त सेवा के विविध प्रकल्प भारत की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सेवा का यह यज्ञ कुंड निरपेक्ष, नि:स्वार्थ कार्यकर्ताओं के परिश्रम की समिधा से प्रज्वलित है। सेवा भाव के जागरण का शुभंकर मंत्र हम सब के लिए मार्गदर्शक है।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नाऽ पुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

वैभव संपन्न, समर्थ भारत के उत्थान हेतु इसी भावना का संक्रमण समाज हितैषियों के अंतर्मन में होना परम आवश्यक है। समाज के सेवाभावी, संवेदनशील व्यक्तियों, संस्थानों के सम्मुख यह श्रेष्ठ करणीय कार्य की समुचित एकत्रित प्रस्तुति सर्वत्र प्रसारित करने की महती भूमिका 'सेवा दिशा 2024' पत्रिका के द्वारा संपूर्ण सफल होगी। पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामना।

मोहन भागवत

शुभकामना संदेश

दत्तात्रेय होसबाले
माननीय सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

॥ ॐ ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय : डॉ. हेडगेवार भवन, महाल नागपुर. 440 032
दूरभाष : 0712 – 2723003, 2720150. Email- sachivalay@sanghngp.org.in

सरसंघचालक : मोहन भागवत — सरकार्यवाह : दत्तात्रेय होसबाले

श्रावण कृ. 09. युगाब्द 5125 — 08.09.2023

हम जो सेवा कार्य करते हैं उसमें कुशलता अर्जित करना, संशोधन करना और उसको व्यवस्थित करना आवश्यक होता है। सेवा कार्य की गुणवत्ता बढ़नी ही चाहिए। इस भाव से सर्वेक्षण पर आधारित, सेवा दिशा का यह अंक, देश भर के कार्यकर्ताओं ने परिश्रम करके तैयार किया है। इसके विश्लेषण प्रेरणा देने वाले हैं।

"हमारे सेवा कार्यों से आज का सेवा लेने वाला, सामर्थ्यवान और स्वावलम्बी होकर, कल का सेवा देने वाला बन जाए। सेवित जनों में आत्मविश्वास एवं सेवा का भाव जागृत हो तथा वे यह विचार करें कि, कल वे सब उनकी सेवा कर सकें जो उनसे कम सुविधा में हैं या संकट का सामना कर रहे हैं"। इस विचार को सफल और समर्थ बनाते हुए पूरे देश में समग्र सेवा का एक भव्य आन्दोलन निर्मित हो।

राष्ट्रीय सेवा भारती पूर्व की भांति संपूर्ण भारत में किये गए सेवा कार्यों के सर्वेक्षण की "सेवा दिशा-2024" पुस्तिका प्रकाशित कर रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि सभी के सामूहिक प्रयासों से सेवा कार्यों का यह संच अनेकों प्रकार से समाज कार्य में लगे कार्यकर्ता एवं सेवा कार्यों में सहयोग करने वाले सभी के लिए बहुविधि उपयोगी सिद्ध होगा।

सफलता के लिए अनेकों शुभकामनाएँ।

दत्तात्रेय होसबाले
(सरकार्यवाह)

भूमिका

पराग अभ्यंकर

अखिल भारतीय सेवा प्रमुख

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

'सेवा' हिन्दू संस्कृति के मूल में है। कहा भी है 'सेवा परमो धर्मः'। समाज का कोई भी अंग वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित या पीड़ित न रहे तथा भारत को परम वैभवशाली बनाने में उसका भी समान योगदान हो इस संकल्प की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक भी सतत् प्रयासरत हैं। निर्बल की क्षमता का विकास कर उसे स्वावलम्बी, स्वाभिमानी बनाना है।

आपदाओं में पीड़ित की सहायता का कार्य तो संघ स्थापना के समय से ही स्वयंसेवक करते आए हैं। परन्तु वंचित, अभावग्रस्त एवं उपेक्षित के समग्र विकास के लिए निरन्तर सेवा कार्यों की आवश्यकता होती है। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी की जन्मशती 1989 से इस कार्य पर विशेष ध्यान दिया गया और सेवा से जीवन रक्षण के साथ-साथ सेवित के उन्नत जीवन निर्माण की दिशा में आवश्यक सेवा कार्य भी प्रारंभ किए गए।

सम्पूर्ण भारत में स्वयंसेवकों, सेवा भारती तथा मातृ संगठनों द्वारा संचालित सेवा कार्यों से सम्बन्धित जानकारी का संकलन कर पुस्तिका ''सेवा दिशा'' का प्रकाशन 1995, 1997, 2004 के पश्चात् प्रत्येक पांच वर्ष की अवधि में नियमित किया जा रहा है।

प्रमुख कार्यकर्ता सेवाकार्य के संचालन स्थल पर प्रत्यक्ष जाकर प्रकल्प की गुणवत्ता, परिणाम एवं प्रभाव के मूल्यांकन के लिए आवश्यक आंकड़े व जानकारी एकत्र करते हैं। यह सर्वेक्षण कार्य आंकड़ों का संकलन मात्र नहीं है। कार्यकर्ताओं ने सेवित जन तथा उनके परिजनों से चर्चा कर, सेवा कार्य के कारण आये परिवर्तन एवं उनकी आवश्कताओं को निकट से समझा है। इससे कार्यकर्ताओं को सेवितों के हितार्थ नवीन आयामों के साथ कार्य करने में भी सहायता मिलेगी।

शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सेवा के आयाम तथा विगत वर्षों की आपदाओं में स्वयंसेवकों द्वारा किये सेवा कार्यों की जानकारी, विविध आरेखों सहित सेवा दिशा का यह अंक आपके हाथ में है।

'सेवा दिशा' के लिए तथ्य संकलन करने का कार्य तकनीकी के नये आयाम मोबाईल एप द्वारा सर्वे करने का प्रथम प्रयोग 2019 में किया गया था। इस वर्ष भी मोबाईल एप 'सेवा दिशा-2024' द्वारा सर्वेक्षण कार्य किया गया। परिश्रम पूर्वक इस कार्य को सम्पादित करने वाले कार्यकर्ताओं का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

एकत्र आंकड़ों का अध्ययन कर उसे रुचिपूर्ण पद्धति से हमारे समक्ष प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय सेवा भारती तथा सेवा भारती दिल्ली कार्यालय ने अहोरात्र कार्य कर निश्चित समयावधि में हमें उपलब्ध कराया इस हेतु उनका भी आभार।

सर्वेक्षण हेतु मोबाइल एप्लिकेशन निर्माण कर हमारा कार्य सरल बनाने वाली कंपनी 'Parkhya Solutions' को भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

आशा है 'सेवा दिशा 2024' में संकलित जानकारी पाठकों, शोधार्थियों एवं अपने जीवन में 'सेवा जीवनादर्श' अपनाने वाले बन्धुओं के लिए बहुउपयोगी होगी।

पुनश्चः सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अप्रतिम प्रयास करने वाले कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन आभार।

प्रस्तावना

पन्नालाल भंसाली
अध्यक्ष, राष्ट्रीय सेवा भारती

'सेवा दिशा-2024' अपने कलेवर में तैयार होकर अपने मंगल भाव को प्रगट करने हेतु हमारे लिए पुस्तक रूप में उपस्थित है। मन ऊर्जा से पूरित हो रहा है कि हम सेवा कार्यों में दिशा एवं दशा बोध के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरणा प्राप्त कर असंख्य स्वयंसेवक सेवा कार्यों में रत है। 'नर सेवा, नारायण सेवा' के ध्येय को हृदय में संजोकर समाज के वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित एवं पीड़ित बन्धुओं को देश की मुख्यधारा में खड़े करने हेतु शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य एवं सामाजिक आयामों के माध्यम से अपना कर्तव्य मान कर स्वयंसेवक सेवाकार्य करते हैं।

संघ की प्रेरणा से अनेकों कार्यकर्ता संस्थागत सेवा कार्य करते हैं। ऐसी सभी सेवाभावी संस्थाएं समान उद्देश्य पूर्ति हेतु कार्य कर रही है। इन संस्थाओं में भौगोलिक एवं सामाजिक आधार पर जानकारी एवं प्रशिक्षण हेतु सभी में कार्य का सामंजस्य, गुणवत्ता एवं मूल्यांकन-विश्लेषण आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 2003 में राष्ट्रीय सेवा भारती की स्थापना दिल्ली में हुई। वर्तमान में राष्ट्रीय सेवा भारती अपनी लगभग 1000 सम्बद्ध संस्थाओं के साथ एक "Umbrella Organization" है।

देश में एक ओर निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करने वाले, ध्येय के प्रति समर्पित कार्यकर्ता हैं तो दूसरी ओर भामाशाह वृत्ति का स्मरण कराने वाला प्रबुद्ध एवं सम्पन्न वर्ग हैं। आज देश में विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाएं 'सेतु' के रूप में कार्य करते हुये सारे समाज को जोड़ने का प्रयास कर रही हैं। 'सेवा दिशा-2024' इन सारे प्रयासों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का छोटा सा प्रयास है।

मैं इन संस्थाओं एवं कार्यकर्ता बन्धुओं के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करता हूं। उपरोक्त सभी बन्धुओं के अंतःकरण के भाव एवं स्नेह को धन्यवाद जैसे कृत्रिम शब्दों में बांधना न्याय-संगत नहीं होगा। परन्तु, यह भाव निरन्तर विकसित हो यही प्रार्थना है। आशा है, हमारा यह एक और प्रयास पाठक बन्धुओं की जिज्ञासा को अल्प मात्रा में ही क्यों न हो; पूर्ति करने में सफल होगा।

आइए, सेवा क्षेत्र में कार्य करने वाले सेवा वृत्तियों की निरन्तरता एवं उत्साहवर्द्धन में हम सभी सहभागी बने।

सेवा से स्वाभिमान जागरण

■ डॉ. मोहनराव भागवत

संघ के स्वयंसेवक सदैव से ही सेवा करते आए हैं। संघ की स्थापना के साथ डॉ. हेडगेवार जी ने सेवा को संघ के मूल के रूप में स्थापित किया। जहां-जहां समाज में कोई आवश्यकता है या अभाव है, तो पूर्ति करने हेतु संघ के कार्यकर्ता अपनी शक्ति के अनुसार सेवा कार्य करते हैं। इसलिए जगह-जगह अनेक सेवा कार्य चल रहे हैं। डॉ. हेडगेवार जी की जन्मशताब्दी के समय सोचा गया कि देश भर में इतना सारा काम हो रहा है, तो इसको एक व्यवस्था में लाया जाए और उसके आधार पर उस कार्य का विस्तार करें। तभी से संघ में सेवा विभाग का कार्य प्रारंभ हुआ और कुछ वर्ष पश्चात् औपचारिक सेवा विभाग भी बन गया।

संघ के स्वयंसेवक स्वयं सेवा करने लगे, तो उनको ये भी ध्यान में आया कि अपने देश में कोई अकेले हम नहीं हैं, बहुत लोग बहुत प्रकार से सेवा कर रहे हैं। हम ये जानते हैं कि यहां हज़ारों मील दूर से लोग आए, उन्होंने हमारी सेवा की। पर, ये नहीं जानते कि उनके आने से पहले हम बहुत सारी सेवा कर रहे थे, कर रहे हैं और करते रहेंगे। हमारा समाज धार्मिक है, उसके मन में करुणा है और इसलिए वह सेवा करता रहता है।

विभिन्न स्थानों पर बातचीत में यह पूछा जाता है कि हमारी सेवा दृष्टि क्या है? तो हम बताते हैं कि हमारे यहां सेवा जीवन का स्वभाव है क्योंकि मनुष्य में आत्मा है और आत्मा सर्वत्र है। सब में वही एक परमात्मा है। इसके चलते मनुष्य में आत्मीयता है। उसकी यह आत्मीयता स्वाभाविक रूप से प्रकट होती है। इसलिए सेवाभाव है। सभी अपने लोग हैं इसलिए उनकी सहायता करना अपना कर्तव्य है। साधन सम्पन्न व सशक्त लोग यदि दुर्बलों की सेवा करते हैं, तो जीवन चलता है समाज की धारणा होती है। "Survival of the Fittest" की बजाय "The fittest will let help others survive" का भाव रहता है तो दुनिया चलती है। यह समाज का धारण करने वाला धर्म भी है। यह संघ ने शुरू नहीं किया बल्कि प्राचीन काल से ही जारी है।

इस सेवा भावना के आधार पर हमारा परिवार और हमारा समाज चलता है। कालान्तर में हम सब इस सेवा भावना को भूल गए, इसलिए हमारे 'परिवार' में भी पतन आया और 2000 वर्षों में हमारे समाज में भी पतन आता गया। इस सेवा धर्म के अभाव का अर्थ है मनुष्य का स्वार्थी तथा भेद दृष्टि वाला स्वभाव होना।

जीवन में जब हम सेवा के बारे में जानते हैं तो ध्यान में आता है कि सेवा साधन भी है और साध्य भी। सेवा का धर्म, सेवा का स्वभाव और सेवा के लिए आवश्यक प्रेरणा साध्य भी है और साधन भी। आप इन परिणामों को प्राप्त करने के लिए इन का आलंबन करते हैं तो आपको समाधान मिलता है कि 'मैं अभी मनुष्य हूं ,मैं समाज हितैषी प्राणी हूं, और मैं अपनों के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहा हूं'। '36 चेम्बर्स ऑफ द शओलिन' फिल्म में दिखाया गया है कि पानी भरने और सब्जी काटने में भी व्यायाम है। इसलिए व्यायाम साध्य है कि साधन? वो तो दोनों है।

ऐसे ही सेवा साध्य भी है और साधन भी; केवल सेवा के लिए ही सेवा उसका अर्थ नहीं है। सेवा स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि समाज का प्रत्येक घटक मेरी बराबरी का हो, इसके लिए समाज के घटक को यह विश्वास रहे कि कोई बात नहीं मैं अकेला नहीं हूं इस विशाल दुनिया में। संकटों में सब लोग मेरे साथ हैं ऐसा उसका विश्वास बना रहे। उसको यह अनुभूति हो कि मैं कुछ कर सकता हूं, मैं अपना भविष्य स्वयं बना सकता हूं। इसे हम संघ की भाषा में कहते हैं सिंहत्व जागृत करना। इस सिंहत्व जागृति के लिए ही सेवा है।

सेवा क्यों करनी है? इस प्रश्न का भी विचार करते हैं तो जानकारी में आता है कि यह सारा विश्व मेरा अपना है। इसलिए मैं अपनों के लिए सेवा करता हूं। सेवा से क्या मिला यह प्रश्न हमारे यहां निरर्थक माना गया है। पाश्चात्य देशों अर्थात् ईसाई मिशनरियों की सेवा संकल्पना में ऐसा नहीं है। जहां मतान्तरण नहीं होता, वहां वे सेवा कार्य करते ही नहीं। जहां मतान्तरण की संभावना नहीं दिखती वहां सेवा करने के लिए उन्हें पैसा नहीं मिलता। इसलिए वे वहां सेवा प्रकल्प चलाते ही नहीं। यदि शुरू करते भी हैं तो चलता हुआ प्रकल्प बंद कर देते हैं। उनकी सेवा में अपनापन नहीं रहता। उनकी सेवा का असली भाव है कि यह 'ईसाइयों के लिए' है। सुनामी आदि आपदाओं के समय तथा भुज में आए भूकम्प के दौरान यही देखा गया; जो ईसा मसीह की प्रार्थना नहीं करते अथवा जो चर्च में नहीं जाते उन्हें मिशनरियों की सेवा का लाभ नहीं मिलता।

संघ का सेवा कार्य ईसाई मिशनरियों के कार्य की प्रतिक्रिया-स्वरूप शुरू नहीं हुआ है। संघ का कार्य किसी की प्रतिक्रिया-स्वरूप प्रारंभ नहीं हुआ। इसलिए सेवाकार्य भी किसी की प्रतिक्रिया-स्वरूप नहीं है। संघ के स्वयंसेवकों ने पहला सेवा कार्य रामटेक में किया था। वहां तो ईसाई मिशनरियां नहीं थीं। रामटेक में हिंदुओं का धार्मिक उत्सव था। जहां गांव-गांव से बड़ी संख्या में भक्त आते हैं। वे ठीक से मंदिर में दर्शन कर सकें इस दृष्टि से वहां सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त रहनी चाहिए, इसलिए स्वयंसेवकों ने वहां व्यवस्था की।

प्रारम्भ से ही स्वयंसेवक बहुत सारे सेवा कार्य कर रहे थे। इसलिए उन्हें एकत्र कर उनका सुसंगठित रूप खड़ा

सेवा साध्य भी है और साधन भी; केवल सेवा के लिए ही सेवा उसका अर्थ नहीं है। सेवा स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि समाज का प्रत्येक घटक मेरी बराबरी का हो, इसके लिए समाज के घटक को यह विश्वास रहे कि कोई बात नहीं मैं अकेला नहीं हूं इस विशाल दुनिया में। संकटों में सब लोग मेरे साथ हैं, ऐसा उसका विश्वास बना रहे। उसको यह अनुभूति हो कि मैं कुछ कर सकता हूं, मैं अपना भविष्य स्वयं बना सकता हूं। इसे हम संघ की भाषा में कहते हैं सिंहत्व जागृत करना। इस सिंहत्व जागृति के लिए ही सेवा है।

करने और सेवा कार्यों की संख्या व गति बढ़ाने के लिए डॉक्टर हेडगेवार जन्म शताब्दी वर्ष में निधि संकलन प्रारंभ हुआ। सेवा निधि एकत्र हो गई। कौन क्या सेवा कर रहा है उसका भी ब्योरा प्राप्त हो गया। वह संख्या बढ़ सकती है यह तो सबके मन में था। उस समय बालासाहब ने कहा था कि 5 वर्ष में सेवा प्रकल्पों की संख्या बढ़ाकर हमें 10000 करनी है। परंतु वह लक्ष्य मात्र 2 साल में प्राप्त हो गया। उससे यह भी ध्यान में आया कि हम जो कुछ अभी कर रहे हैं उससे कई गुना ज्यादा कर सकते हैं। क्योंकि संघ शाखाओं की संख्या में वृद्धि हुई। इसके बाद सेवा विभाग का निर्माण हुआ। सेवा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के व्यक्ति-निर्माण कार्य का ही एक अंग है। सेवा प्रशिक्षण, सेवा मानसिकता, सेवा स्वभाव, व्यक्ति निर्माण का कार्य ही है। लेकिन दूसरी तरफ इसका एक औपचारिक रूप है सेवा करना। उसके लिए प्रकल्प, धन, संविधान, एवं महिला पुरुष सब मिलकर काम करेंगे। कार्य विस्तार होगा तो मानधन-सेवी भी रहेंगे। संघ में मानधन नहीं रहता। लेकिन इस प्रवृत्ति में स्वयंसेवकों को जाना पड़ेगा। संघ में सेवा का प्रशिक्षण शाखा पर ही होता है। इसके लिए संघ में सेवा प्रमुख व्यवस्था बनी है। शाखा किसी सेवा प्रकल्प को जब तक बिना खर्चे के अपने बलबूते चला सकती है, तब तक शाखा के माध्यम से चलेगा। जिस दिन उसमें धन की भूमिका शुरू हो गई तो उसके लिए समिति बना दी जाती है। और फिर वह सेवा भारती के नाम से चलने लगता है। सेवा का एक सुसंगठित स्वरूप और उसके लिए विशेष प्रशिक्षणादि डॉ. हेडगेवार की जन्मशती के बाद संघ में शुरू हुआ। उससे पहले बहुत सारे सेवा कार्य स्वयंसेवक चला रहे थे।

जहां कम, वहां हम

हम जो सेवा कार्य कर रहे हैं उसकी परख सेवित और सेवक दोनों तरफ से होनी चाहिए। जिनकी सेवा होती है उन्हें लगना चाहिए कि उनकी समस्या का समाधान, उनका उन्नयन तथा उनकी अभाव पूर्ति हो रही है। संस्कार निर्माण हो रहा है। यह हमारे निर्णय पर नहीं हो सकता। सेवित को लगना चाहिए कि मैं पहले से अच्छा हो गया हूं, मेरे संस्कार अच्छे हुए हैं, मेरे साधन बढ़ गए और मेरा विश्वास बढ़ गया, मेरा जीवन स्तर और अच्छा हो गया। उसे लगना चाहिए कि मुझे समाधान मिला है। जब हम सेवा करने के लिए जाते हैं, तो वहां जरूरतमंद लोगों को जो चाहिए उन्हें वह देना चाहिए। हम ऐसा नहीं सोचते कि हम केवल शिक्षा अथवा स्वास्थ्य के ही प्रकल्प चलाएंगे। जहां आवश्यकता है वहां जाएंगे। और जहां जो चाहिए वहां के लोगों से बात करके उन्हीं के प्रयासों से वही देने का प्रयास करेंगे। उन्हीं को आधार बनाकर हम मदद करेंगे। वहां कार्य खड़ा हो जाएगा और उनको जो चाहिए वह सेवा कार्य खड़ा हो जाएगा। इसलिए सेवा कार्य की परख सेवितजन करेंगे। जिनकी सेवा कर रहे हैं वह करेंगे। उन्हें लगना चाहिए कि ये लोग यहां आते हैं, प्रमाणिकता से सेवा करते हैं और अच्छी सेवा करते हैं। हमारे सेवा कार्य में ऐसा अनुभव आता है। कई स्थानों पर ऐसा भी देखा गया है कि यदि कोई विरोध करता है तो स्थानीय लोग ही कहते हैं कि इस सेवा प्रकल्प को हाथ नहीं लगाना है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संघ का विरोध है लेकिन फिर भी वहां वनवासी कल्याण आश्रम के लोग जाते हैं; क्योंकि वह सेवा करते हैं। डॉ. हेडगेवार सेवा समिति के कार्यकर्ता भी जाते हैं; क्योंकि वे सेवा करते हैं। उनको अगर रोका गया तो गांव वाले ही खड़े होकर कहते हैं कि इन्हें मत हाथ लगाओ। झारखंड में तो नक्सली आते ही हैं। हमारे सह क्षेत्र संघचालक जी के पास नक्सली कमांडर्स यह कहने के लिए आते थे कि हमारे गांव में शिशु मंदिर शुरू करना है। इसमें आपकी मदद चाहिए। सह क्षेत्र संघचालक जी ने कहा मेरी मदद क्यों चाहिए, सरकार को बंदूक दिखा दो आपको मदद मिल जाएगी। वो कहने लगे नहीं आप संघ के हो प्रमाणिकता से काम करते हो इसलिए आपकी मदद चाहिए। संघ चालक जी ने कहा हम लोग ऐसी मदद नहीं करते। हम भवन निर्माण सामग्री देंगे। आपको श्रमदान करके स्कूल भवन स्वयं बनाना पड़ेगा। उन्होंने कहा हम वह भी करेंगे। लेकिन वहां सिखाने के लिए कोई आना चाहिए। संघचालक जी ने कहा, 'हां, वह मैं अवश्य करूंगा।' सेवा, यानी गांव वालों को जो चाहिए था वह दिया। यह एक उदाहरण है।

मूल्यांकन

क्षेत्र के लोगों का ऐसा विश्वास एक दिन में नहीं बना एक कार्यकर्ता के प्रयासों से भी नहीं बना बल्कि लंबे समय तक निरंतर स्वयंसेवक इसी भाव से कार्य करते रहते हैं। जब हम सेवा करते हैं तो यह देखना चाहिए कि हमने जो कार्य किया वह कम से कम व्यय में हुआ या नहीं। और जो हुआ वह उसी के लिए हुआ, यानी सेवा के लिए हुआ। सेवा से जुड़ी सामग्री पर हुआ? चिकित्सा केन्द्र में खर्च लोगों की चिकित्सा आदि पर हुआ अथवा वहां के लिए एक मेज कुर्सी खरीदने पर; इसका मूल्यांकन भी होता है। इसके अलावा उस प्रकल्प के माध्यम से हम जो परिवर्तन चाहते हैं, वह आया अथवा नहीं। जैसे अब यहां लोग जात-पात नहीं मानते। स्वयं को निम्न नहीं समझते। लोगों को मालूम है कि भारत अपना देश है। यह सारी बातें और राष्ट्रीयता का भाव, समरसता का भाव, स्वदेशी का भाव आ रहा है या नहीं; यह हम देखेंगे तो हमारे मूल्यांकन के भी निकष होते हैं। सेवा कार्यों की जो 5 साल की हमारी गणना होती है, उसमें इस दृष्टि से भी हम मूल्यांकन करते हैं। और यह सब मिलाकर सेवा कार्य का सही मूल्यांकन होता है। इसमें एक बिंदु और है, वह है समाज का। समाज भी इसे देखता है। वह भी इसका निर्णायक है। इसका निर्णय हमारे पक्ष में है, यह हमें कैसे पता चलता है? जब हम प्रकल्प शुरू करते हैं, वहां उसके व्यय के लिए हमें चिंता नहीं रहती। चाहिए तो समाज देता है। हम करना चाहते हैं और पैसा नहीं है इसलिए रुक गए यह कभी नहीं होता है।

समाज आधारित कार्य

अजीम प्रेम जी से पहली बार मिलने गए तो वे कल्पना भी नहीं कर रहे थे कि संघ वाले मुझसे क्यों मिल रहे हैं। उनको लगा कि यह पैसे के लिए आए हैं। सेवा के लिए चंदा मांगने आए हैं। सवा-डेढ़ घंटे तक बातचीत हुई। पैसे की बात ही नहीं निकली। हमें 'ओपनिंग' देने के लिए उन्होंने कहा। उनको लगा कि यह संकोच कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आपके सेवा कार्यों की फंडिंग कैसे होती है? हमने कहा कि, 'फंडिंग वगैरा का हमारे यहां सिस्टम नहीं है। क्योंकि हम उसका विचार ही नहीं करते। हमको कहीं अभाव दिखता है तो हमारे कार्यकर्ता सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं। जितना बस में है, उतना शुरू कर देते हैं। धीरे-धीरे जो भी लगता है वह समाज देता है'। उन्होंने कहा कि 'फिर मेरे पास क्यों आए हैं'। तब मैंने बताया कि, सज्जन लोगों से सम्पर्क के तहत हम आपसे मिलने आए हैं। वहां एक और बहुत बड़े व्यक्ति आए हुए थे। वे कहने लगे कि मैं आपके मॉडल का अध्ययन करना चाहता हूं। मैं भी समाज सेवा करना चाहता हूं। भगवान की दया से भरपूर है हमारे पास। मैंने कहा :- 'आप सेवा जरूर करिए यह बहुत अच्छा विचार है। हम आपकी पूरी मदद करेंगे, लेकिन हमारा मॉडल लेकर मत चलो, आप अपना मॉडल बनाओ'। वह बोले, 'क्यों?' मैंने कहा कि 'हमारा मॉडल ऐसा है कि हमारा कार्यकर्ता फटेहाल है, फटे बनियान को सिलने के लिए घर में कुछ नहीं है, लेकिन फिर भी उससे समाज का दु:ख देखा नहीं जाता। और उसके पास जो है वही लेकर वह मदद के लिए दौड़ पड़ता है। आपका ऐसा नहीं है। आपने सब जमा कर लिया है। सात पीढ़ियों की आश्वस्ति हो गई है। अब आपको सेवा करनी है, यह बात अच्छी है हम मदद करेंगे उसमें। लेकिन आपके लिए हमारा मॉडल अनुकूल नहीं होगा।■

(यह लेख वार्ताधारित है)

समर्थ भारत की सेवा दिशा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले मानते हैं कि भारत में सेवा की प्राचीन परम्परा है। राष्ट्रीय सेवा भारती के प्रचार प्रमुख उदय सिंह कुन्तल ने दत्ता जी से लंबी बातचीत की है। प्रस्तुत है उसके संपादित अंश –

सेवा तत्व समाज के मूल में है। आप इसे कैसे समझाना चाहेंगे?

एक दृष्टि से जीवन के हर चरण में हम सेवा का भाव देखते हैं। आत्मीयता जहां है वहां सेवा का भाव स्वाभाविक रूप से जागृत होता है। माँ अपने बच्चे के लिए जो करती है, यह उसका कर्त्तव्य भी है और वात्सल्य भी। उस वात्सल्य की आत्मीयता को प्राप्त करने के बाद बच्चा भविष्य में अपने माता-पिता की सेवा करता है। क्योंकि उसकी आत्मीयता में उसका अपनापन है, उसके अन्तर्मन का भाव जुड़ा होता है। जीवन के हर क्षेत्र में सेवा है। समाज में कोई किसान है, कोई धोबी है, कोई नाई है जो अपने जीवन में समाज के लिए कई प्रकार के कार्य करते हैं, वह उनका व्यवसाय है। लेकिन व्यवसाय करने में क्या भाव है? यदि आत्मीयता का भाव है तो वह एक दृष्टि में सेवा है।

हम देखेंगे तो पायेंगे कि अपने पौराणिक ग्रन्थों में जो दूसरों की रक्षा करता है, जो दूसरों के विकास में सहायक है, जो दूसरों के जीवन में आनन्द भरता है, वह केवल मानव तक नहीं बल्कि प्राणियों और पक्षियों तक की सेवा करता है; वही मनुष्य कहलाता है। इसलिए राजा दिलीप की कहानी सबके लिए प्रेरणादायी है, उसका हमारी परम्पराओं में कई बार उल्लेख होता है। उन्होंने जिस प्रकार नन्दिनी गाय की सेवा की वह मानव सेवा से भी बढ़कर है। यह क्यों होता है, जब हमारा हृदय द्रवित होता है, तब ऐसा होता है। हृदय द्रवित क्यों होता है; क्योंकि सबमें आत्मीयता है। इस दृष्टि में हम सबको एक जैसा देखते हैं तो सेवा का भाव जागृत होता है।

सेवा और अध्यात्म में क्या सम्बन्ध है?

सेवा और अध्यात्म अलग-अलग नहीं है। अध्यात्म की साधना के लिए सेवा आवश्यक है। अध्यात्म को साधने के लिए सेवा माध्यम है। सारगाछी में स्वामी अखंडानन्दजी ने अध्यात्म की साधना सेवा के माध्यम से ही की है। जब सेवा करते-करते आध्यात्मिक अनुभूति होती है; वही परिपूर्ण सेवा है, ईश्वर साधना है। ईश्वर जो सर्वत्र है, हर किसी के अन्दर है, इसलिए 'नर सेवा ही नारायण सेवा' है, यह कहा जाता है।

सामान्य समाज जो सेवा के कार्यों से जुड़ता है उसे किसी न किसी का सान्निध्य प्राप्त है। समाज के सभी समूह किसी न किसी को गुरु मानते हैं। प्रत्येक गुरु, साधु एवं महात्मा ने समाज में सेवा के लिए कहा है, कि प्रत्येक व्यक्ति को सेवा करनी चाहिए। सभी संतों, साधुओं महात्माओं ने कहा है, प्राणिमात्र पर दया करो, विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में

शिक्षा केन्द्र, कलबुर्गी, कर्नाटक

सद्भाव हो। जब सत्संग में मिलते हैं तो बार-बार सेवा के बारे में सुनने को मिलता है। लेकिन यह ज्ञान सेवा कार्य करने में काम आना चाहिए, नहीं तो केवल मैंने सुन लिया है, इसका क्या लाभ? सत्संग का लाभ लेना है तो उस को सेवा के माध्यम से पुण्य बनाना है।

सेवा कार्यों से समाज में समरसता की वृद्धि होती है। इस विषय को आप कैसे समझाना चाहेंगे?

स्वयंसेवकों ने इसी भावना को लेकर सेवा बस्तियों में कार्य प्रारम्भ किये हैं। समाज में लोगों के बीच ऊँच-नीच, भेदभाव, अगड़ा-पिछड़ा होना एक कलंक है। इसको मिटाने के लिए सेवा एक प्रबल मार्ग है। एक बहुत ही अच्छा तथा सशक्त माध्यम है। यह हमें पहचानना है। क्योंकि जीवन में विभिन्न भौतिक आवश्यकताएं सभी को होती हैं, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वाबलंबन। इनको पूर्ण करना सरकार का कर्त्तव्य है और यह समाज की आवश्यकता भी है। समाज के प्रत्येक वंचित की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना समाज का भी कर्त्तव्य है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि जब हजारों, लाखों लोग भूख और गरीबी से त्रस्त है तो सुशिक्षित लोगों का यह कर्त्तव्य है कि उन्होंने जो शिक्षा प्राप्त की है वह समाज की देन है, तो यह उनका भी कर्त्तव्य है कि वे भी दूसरे वंचितों को शिक्षा के अवसर दें।

सेवा कार्य में भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि आत्मीयता रखना, परस्पर सहयोग एवं सेवित का सम्मान करना भी उतना ही आवश्यक है। अगर आप किसी को कुछ दे रहे हैं तो इस देने के पीछे का भाव क्या है? यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। सरकार ने कुछ भौतिक सामग्री पहुंचा दी तो यह पर्याप्त नहीं है। अगर सरकार यह भौतिक सामग्री लोगों तक पहुंचा रही है तो देखना होगा कि वह इस कार्य को नौकर बनकर कर रही है या उसके पारिवारिक भावना से इस कार्य को कर रही है। इसलिए मैं कहता हूं कि सेवा कार्य में भाव होना आवश्यक

है क्योंकि देना ही पर्याप्त नहीं है। समरसता तब है जब हम कोई वस्तु किसी को आत्मीयता पूर्वक सेवा के भाव के साथ दें। सेवा के कार्य में यह भाव बहुत ही गहनता से अन्तर्निहित है। यह सेवाभाव कैसे आता है? यदि इस पर विचार करें तो देखते हैं कि सेवा करने वाले केवल सेवा कार्य ही नहीं करते हैं बल्कि उन लोगों के साथ बैठते हैं, उन्हें जानते हैं उनके सुख-दु:ख में भागीदार बनते हैं। यही समरसता है। इसलिए सेवा एक माध्यम है उन तक पहुंचने का, उनके सुख-दु:ख में सहभागी बनकर उनके साथ खड़े रहने का। संघ के कार्यकर्त्ता जब इस भाव से सेवा कार्य करते हैं तो वो अपने सम्पर्क में आये हुए लोगों के साथ समरस हो जाते हैं। उनके सुख-दुख के साझीदार बनते हैं। छात्रावासों, सेवा बस्तियों, मंदिरों, शाखाओं आदि में ऐसे लोग आ रहे हैं तो इस कारण से समरसता का भाव केवल सामग्री बांटने, उपदेश देने तक नहीं है बल्कि कार्यकर्त्ताओं ने जीवन में उनके साथ समरस होकर दिखाया है।

सेवा में मातृशक्ति का बहुत बड़ा योगदान रहता है। ऐसे में आप सेवा में मातृशक्ति के इस योगदान को कैसे देखते हैं?

मातृशक्ति सदैव ही हमारे लिए महत्वपूर्ण एवं पूजनीय रही है। कहा गया है कि ईश्वर पृथ्वी पर स्वयं नहीं रह सकता, इसलिए उसने मातृ शक्ति का सृजन किया है। हमारी मातृ शक्ति विभिन्न प्रकार के सेवा कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। तमिलनाडू में अनेक माता-बहनें 'महिला स्वयं सहायता समूहों' से जुड़ी हुई हैं। देव पूजा, संस्कार देने के कार्य जैसे अनेक और भी बहुत सारे क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें माताएं जुड़ी हुई हैं। माता में कोमलता, वात्सल्य के गुण को ईश्वर ने स्वाभाविक रूप से दिया है। इसलिए वे विभिन्न सेवा कार्यों से जुड़ती हैं।

सेवा कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं में कौन - कौनसे गुण होने चाहिए?

सेवा कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं में पहला गुण अपनापन और आत्मीयता का भाव एवं अंहकार शून्यता होना चाहिए। अगर सेवा कार्यकर्ता स्वयं के बारे में सोच रहा है तो वह सेवा कार्य नहीं कर सकता

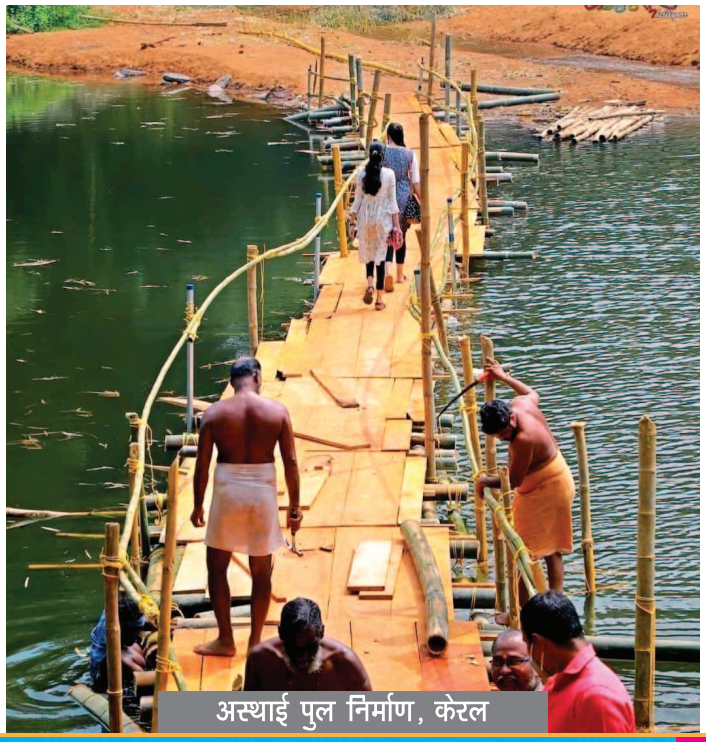

अस्थाई पुल निर्माण, केरल

है। उसमें यह भाव होना चाहिए कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता है। भगिनी निवेदिता आयरलैण्ड से आयी थीं, उसने कलकत्ता में प्लेग महामारी के समय, जब चारों ओर गंदगी ही गंदगी थी, कचरा फैला था तब उन्होंने स्वयं स्वच्छता करने का काम आरम्भ किया। उन्होंने यह कार्य करने से पहले कुछ नहीं सोचा, उन्होंने यह नहीं सोचा कि मैं यूरोप से आयी हूं, पढ़ी-लिखी हूं। उसके मस्तिष्क में केवल यह आया कि मुझे यह सेवा कार्य करना है, वह अहंकार शून्य थी, उनके अन्दर सेवा करने की भावना थी। इसलिए अहंकार शून्य होना, सेवा कार्यकर्ता के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है।

सेवा के लिए कार्यकर्ताओं में मिलकर कार्य करने की भावना होनी चाहिए। वह यह नहीं सोचे कि मैं ही यह कार्य कर रहा हूं, बल्कि उसे यह सोचना चाहिए कि हम सब मिलकर यह कार्य कर रहे हैं। भावनात्मक दृष्टि से सेवा करनी है मन में केवल ऐसा नहीं होना चाहिए बल्कि इसके लिए एक निश्चित योजना भी होनी चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने बताया है कि सेवा कार्यकर्ता स्वयं से यह तीन प्रश्न पूछे कि :-

1. क्या हममें सेवा कार्य करने की भावना है, तीव्रता है?
2. क्या हमारे पास सेवा कार्य से संबंधित कोई योजना है, कोई मार्ग है?
3. यदि इस मार्ग में बाधाएं आती हैं-हमारा तिरस्कार होता है, टीका-टिप्पणियां होती हैं तो क्या ऐसी स्थिति में, हम सेवा मार्ग पर अडिग रहेंगे?

यदि इन प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' है, तो हम सेवा कार्य के लिए तत्पर हैं।

राष्ट्र निर्माण में सेवाकार्य बहुत महत्वपूर्ण होते हैं कुछ उदाहरणों के माध्यम से आप बताना चाहेंगे।

पूर्वोत्तर के राज्य भारत के अन्य राज्यों से संवाद की कमी (कम्यूनिकेशन गैप) होने के कारण आपस में अपेक्षाकृत कम सम्पर्क में है। इसलिए हम वहां के तीर्थ, वहां के लोगों से बहुत कम परिचित हैं। वहां पर धर्मान्तरण भी व्यापक परिमाण में हुआ है। इसके कारण केवल उनकी पूजा पद्धति बदली ऐसा नहीं है, बल्कि वहां राष्ट्र विरोधी ताकतें खड़ी हो गयी हैं। इन जनजातीय क्षेत्रों में सेवा के द्वारा जो कार्य हुआ है, उसी से समाज के साथ उनका जुड़ाव सम्भव हो पाया है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में सेवाकार्य करते हुए हमने न केवल उन जनजातियों की संस्कार पद्धिति; उनके आचरण और संस्कृति को बचाया बल्कि उनकी पहचान और अस्मिता को भी बचाया है। यह सेवाकार्य उनकी जो मूल धार्मिक पद्धतियां हैं, उनको नष्ट करके नहीं किया, जैसा कि ईसाई मिशनरियों ने किया। हमने उनकी सब परम्पराओं को सम्मानित करके, उनकी श्रद्धा का जागरण कर, उनका सम्मान भी किया है। इन राज्यों को अन्य प्रांतों से जोड़ने, उनकी संस्कृति, परम्पराओं एवं पहचान को बचाने के लिए कार्य किया।

संघ के कार्यकर्त्ता सेवा कार्य की आवश्यकता होने पर प्रथम पंक्ति में उपस्थित रहते हैं। उनमें ऐसा समर्पित भाव निर्माण कैसे होता है?

संघ में जो संस्कार, प्रशिक्षण एवं दृष्टि दी जाती है वह अपने लिए न होकर समाज के लिए सर्वस्व समर्पण की है। यह सूत्र उसे उसके जीवन में लाने के लिए कहा जाता है। जब समाज में कष्ट, त्रासदी या कोई संकट आता है, तो वह उसे दूर करने के लिए दौड़ता है। ऐसे ही समाज में कहीं भी कुछ होता है, तो वह सोचता है, समाज मेरा घर है, मेरा परिवार है। यह कर्तव्य भाव संघ के संस्कारों से आता है। इसलिए संघ का स्वयंसेवक आपदा के समय प्रथम पंक्ति में खड़ा होता है। यह सब

उसे कहानियों, परम्परा, कार्यक्रमों में परस्पर सम्मान के द्वारा सिखा दिया जाता है। जो कार्य मैंने किया उसके लिए मुझे क्या मिलेगा, वह यह नहीं देखता है। मेरी प्रसिद्धि हुई क्या? कोई स्थान मिलेगा? क्या कोई प्रमाण-पत्र मिलेगा? इन सब बातों के बारे में संघ का कार्यकर्ता नहीं सोचता है। कई बार व्यक्ति यह सोचता है कि मैं अकेला क्या करूं और कोई साथ में आये तो हम साथ में कार्य करेंगे। अकेले अभावग्रस्त व्यक्ति को लगता है कि साधन, संसाधन नहीं है। तो वह सोचता है पहले साधन संसाधन मिले तो मैं चलूं। संघ के कार्यकर्त्ता, बिना साधन, संसाधन के भी शाखा लगाता है, कार्य करता है, इसलिए वह साधन, संसाधन की प्रतीक्षा किये बिना कार्य करता है। संघ के संस्कार है कि स्वयंसेवक सदैव आपदा में पहले पहुंचता है। उसे पूर्ण विश्वास होता है कि, जब मैं अकेला चलूंगा तो समाज भी मेरे साथ आयेगा। उसे यह विश्वास होता है कि, वह अकेला नहीं है, साधनहीन नहीं है, वह अगर चार कदम रखेगा तो उसके पीछे दो कदम रखने वाला भी आयेगा। यह विश्वास सदैव स्वयंसेवक को रहता है। इस संस्कार के कारण वह सदैव सेवा के कार्य में अग्रणी रहता है।

संघ कार्य अपने सौ वर्ष पूर्ण कर रहा है। वर्तमान समय में सेवा कार्य के स्वरूप के बारे में कार्यकर्ताओं के लिए क्या सन्देश है?

सेवा एक अभियान बने, एक आंदोलन बने। हम पहले से भी कह रहे हैं कि एक-एक परिवार सेवा केन्द्र बने, हम अपने घर से क्या सेवा कर रहे हैं? प्रत्येक को यह सोचना चाहिए। सेवा, समाज में एक आंदोलन बने यह तभी संभव है जब प्रत्येक घर सेवा केन्द्र बने। सेवा के सैकड़ों कार्यक्रम चलते रहे हैं और यह धीरे-धीरे एक विशाल स्वरूप ले रहा है। इसलिए यह सुदृढ़ करना आवश्यक है कि प्रत्येक घर एक सेवा केन्द्र बने।

साथ ही एक बात यह हो कि सेवा के नये - नये आयाम भी हमें देखने होंगे। अलग-अलग आयामों जैसे रक्तदान, थैलेसीमिया एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के बारे में सोचना चाहिए। साथ ही उससे जुड़े चार और नये आयामों के द्वारा भी सेवा कार्य किया जा सकता है। इसी तरह कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करना एक आयाम है क्योंकि केवल साक्षरता से काम नहीं चलेगा। इस तरह के सेवा के नये आयामों को जोड़ना चाहिए। बहुत सारे लोग व्यक्तिगत या परिवार के तौर पर सेवा कार्य कर रहे हैं। सेवा करने वाले लोगों का एक ही गोत्र है - सेवा गोत्र। सबकी एक ही बिरादरी है, सेवा। इस दृष्टि से सबको जोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए। भले ही लोग स्वतंत्र रूप से अपना-अपना सेवा कार्य करें लेकिन उनमें परस्पर एक-दूसरे का सहयोग करने की भावना होनी चाहिए। कोरोना के समय सभी लोगों ने जागरुक किया, सभी लोग इस चुनौती के सामने इकट्ठा हुए, सभी साथ आये इसलिए एक शक्ति बनी और संकट के समय सबने मिलकर कार्य किया। इसलिए सेवाकार्य करने वाले लोगों में आपस में सहयोग और नेटवर्क की आवश्यकता होती है। सेवा कार्य के लिए प्रशिक्षण टीम मॉड्यूल अच्छे तैयार होने चाहिए जिससे आपदा के समय आवश्यक समझ बेहतर हो सके। आपदा प्रबंधन की आवश्यकता समाज में बढ़ रही है। जैसे बहुत सारे कार्य हैं नशे से मुक्ति करवाना, परिवार परामर्श तथा विभिन्न नये आयामों की गुणवत्ता एवं प्रभाव बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। इसलिए सेवा की गुणवत्ता एवं अच्छे परिणाम बढ़ाने के लिए हमें नये-नये विषयों के बारे में सोचना चाहिए।

समाज का बड़ा वर्ग जो शिक्षा और रोजगार से वंचित है। उन तक मूलभूत सुविधाएं शीघ्र पहुंचाने के लिए सेवाकार्य में लगे कार्यकताओं के लिए आपका कोई संदेश है?

समाज का एक बड़ा वर्ग मूलभूत सुविधाओं से वंचित है, यह जानकारी समाज के बाकी लोगों को होनी चाहिए। कई बार जागृति नहीं होती है और लोग अपने-अपने दायरे में अपने-अपने कार्यों में आनन्द से सुख-सुविधा में लगे होते हैं तो बाकी लोगों को यह कैसे पता चलेगा कि कौन वंचित है? यह कैसे पता चलेगा कि किसे जागृत करना आवश्यक है। इसलिए लोगों में, समाज में जागृति लाना बड़ा काम है। जागृति निर्माण के बाद इन सुविधाओं को पहुंचाने के लिए योजना बननी चाहिए। बहुत सारी योजना तैयार है, उसमें सरकार का भी सहयोग है, लेकिन उसे वंचित तक पहुंचायेगा कौन? इसलिए जागृति निर्माण करने के बाद भी इस प्रकार की सुविधाओं को हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए व्यवस्था बननी चाहिए। यह व्यवस्था सुदृढ़ और पारदर्शी बनाने के लिए भी काम होना चाहिए।

समाज में सेवा कार्य करने वाले लोगों को भौतिक रूप से अभावग्रस्त, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचितों के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने चाहिए। हम क्या कर सकते हैं जिससे इनके अभाव दूर हो सकते हैं? इन वंचितों को अभावग्रस्त की श्रेणी से कैसे बाहर ला सकते हैं? समाज आत्मनिर्भर कैसे बने इसको भी ध्यान में रख कर प्रयास करना ही हमारा ध्येय होगा तभी सही अर्थों में सेवा हो पायेगी। वे वंचित चाहे जंगल में रह रहे हों, गांव में या भले ही पहाड़ में रहे हैं उन्हें क्या सुविधायें पहुंचानी हैं? वो उन तक पहुंचनी चाहिए।

इसमें यह महत्वपूर्ण है कि स्थानीय दृष्टि से वहां कौन-कौन से संसाधन उपलब्ध हैं उनको उपयोग में लेते हुए उनकी क्या सहायता की जा सकती है, यह विचार हमारे ध्यान में अवश्य रहना चाहिए। यदि वहां के संसाधनों और ज्ञान का कोई उपयोग नहीं हो पाता है और वो उससे वंचित रहते हैं तो यह समाज निर्माण के लिए नुकसानदायक है। सभी चीजें यदि बाहर से ही मिलें तो कोई लाभ नहीं है। समाज निर्माण में स्थानीय ज्ञान और संसाधनों का पूर्ण लाभ लिया जाना चाहिए। केवल पुण्य कमाने के लिए सेवाकार्य किया जाता है ऐसा नहीं है। सेवा परिवर्तन के लिए एक माध्यम है, इसे अपना कर्तव्य मान कर कार्य करना है।■

स्वंय सहायता समूह-अथरूट, जम्मू

दिशा-बोध

■ सुरेश 'भैय्याजी' जोशी
पूर्व सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

समस्या केन्द्रित चिंतन, परिणाम केन्द्रित योजना

गत कुछ वर्षों में अपने सेवा प्रकल्पों की संख्या अच्छी बढ़ी है। आज उनकी गुणवत्ता पर ध्यान देने की जरूरत है। अगले वर्ष की योजना बनाते समय इस बिन्दु पर सभी कार्यकर्ताओं को विशेष चिंतन करना चाहिए। जो कार्यकर्ता प्रकल्प चला रहे हैं, इसका इस बिन्दु पर प्रबोधन करना होगा। यही नहीं, वहां की स्थानीय संघ शाखा के कार्यकर्ताओं को भी यह दृष्टिकोण प्राप्त होना आवश्यक है। इस दृष्टि से यदि कार्य का मूल्यांकन होगा तो परिणाम अधिक सकारात्मक निकलेंगे। सेवा संस्थाओं द्वारा संचालित सभी सेवा कार्यों की हम अच्छी योजना अपने बलबूते पर बनाएं, तो परिणाम काफी उत्साह जनक रहेंगे। जिला व विभाग स्तर के कार्यकर्ताओं को भी हम सेवा प्रकल्प देखने के लिए भेजें। इससे न केवल अपने कार्यकर्ताओं को वहां जाने के बाद एक नया दृष्टिकोण प्राप्त होगा, बल्कि प्रकल्प चलाने वाले कार्यकर्ताओं का भी प्रबोधन होगा। इस बिंदु पर ठीक से विचार होना चाहिए। गत वर्षों के विशेष प्रयासों के बाद आज समय आ गया है कि हम अपने प्रकल्पों की उपलब्धियों के बारे में भी सोचें। प्रकल्प के माध्यम से हम सेवा तो कर रहे हैं लेकिन उस सेवा के कारण वहां क्या परिवर्तन आ रहा है, इसका चिंतन आवश्यक है। अपने कार्य के संदर्भ में विचार करते समय हम प्रायः तीन चार प्रकार के बिन्दु सामने रखते हैं :-

1. जो अपने साथ जुड़ा है उसके जीवन में कोई परिवर्तन आ रहा है क्या? उसकी जीवनशैली, बोलचाल, रहन-सहन एवम सोचने के ढंग में क्या परिवर्तन आया है? क्या सेवितों को लगता है कि संघ के सेवा प्रकल्प से जुड़ने के बाद उनके जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है?
2. प्रकल्प चलाने वाले व्यक्ति के बारे में भी सोचें कि, क्या वह प्रकल्प चलते हुए एक कार्यकर्ता के रूप में विकसित हो रहा है? कुछ कार्यकर्ता एक दृष्टिकोण लेकर काम कर रहे हैं, परंतु सिलाई केन्द्र चलाने वाली महिला, शिशु मंदिर चलाने वाली महिला, चिकित्सालय चलाने वाला चिकित्सक, गाड़ी लेकर जाने वाला चालक आदि सब अपने सेवा कार्य के साथ एक परिवार के रूप में जुड़े हुए हैं, ऐसा समझकर व्यवहार होना चाहिए।
3. जिन परिवारों से अपना सम्पर्क आता है क्या उनमें कोई परिवर्तन आ रहा है? क्या समय-समय पर इस बात का विचार होना चाहिए कि हमारे सतत् सम्पर्क से संबंधित परिवार में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है या नहीं चौथी।
4. क्या अपने सेवा कार्यों की स्वीकार्यता बढ़ रही है? जहां पर हम यह काम कर रहे हैं, क्या वहां के लोग मानने लगे हैं कि यह हमारा अपना काम है? इस संदर्भ में बराबर विचार होते रहना चाहिए। यह काम अच्छा काम है, चलना चाहिए और सब मिलकर चलाएंगे ऐसी सोच वाले लोगों का एक समूह तैयार हो निर्णय करने वाले लोग भी एक प्रकार अलग प्रकार के होते हैं।

अपनी सेवा भारती की समितियां बनती है, विभिन्न प्रकार की सेवा संस्थाएं हैं। प्रायः सभी में निर्णय करने वाला समूह अलग होता है। अपने साथ काम करते समय उनकी मानसिकता क्या है? क्या उनका भी सेवा बस्ती से जुड़ाव हो रहा है? साथ ही क्या उनकी सोच में सामाजिक समरसता की दृष्टि से परिवर्तन हो रहा है? क्या सेवा बस्ती में उनका आना जाना होता है? समिति में नए जो लोग अपने संपर्क में आते हैं उन्हें सेवा बस्ती में ले जाकर सेवित समाज से समरस करना जरूरी है। पिछले कुछ समय से समाज के काफी प्रतिष्ठित धनी व सम्मान प्राप्त लोग अपने साथ जुड़े हैं। यह अच्छी बात है। हमें उनका बौद्धिक विकास करना है उन्हें मानसिक रूप से तैयार करना होगा कि अब आप सेवा भारती से जुड़े हैं इसलिए जिसके लिए आप धन संग्रह कर रहे हैं, उनके बीच जाकर आपको देखना चाहिए कि वह कैसे रहते हैं और उनकी आवश्यकता है क्या हैं?

एक बात और है जिस पर हम सभी को विचार करना चाहिए। समाज में और अपने स्वयंसेवकों में भी सामान्य रूप से अपने काम के साथ जुड़ने की इच्छा रखने वाला अच्छा वर्ग है। यह वर्ग सेवा भाव से काम करने की इच्छा रखता है और भावनाओं के आधार पर काम करता है। परन्तु धीरे-धीरे हुए इसकी सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि भी समझे यह जरूरी है। सेवा हमारे यहां एक प्राचीन चिंतन है, उस चिंतन को वह भी समझे कि यह मेरा सौभाग्य है कि मैं ऐसे कार्य के साथ जुड़ा हूं। इस प्रकार का भाव उसमें विकसित हो। भावनाओं के आधार पर काम करने वाला सैद्धान्तिक भूमिका को भी स्वीकार करते हुए धीरे-धीरे मूल विचार को समझ कर अच्छा काम करने वाला कार्यकर्ता बन सकता है। ऐसे लोगों के बारे में हमें योजना पूर्व विचार करना चाहिए।

एक और बात का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा वह यह है कि अध्ययन के आधार पर सेवा कार्य शुरू हो। कहां किस प्रकार की आवश्यकता है, पहले उसका समुचित अध्ययन होना चाहिए। कहीं किसी प्रकार की आवश्यकता महसूस हुई और हमने कार्य प्रारंभ कर दिया। लेकिन कार्य के साथ-साथ धीरे-धीरे हमें अपने कार्यकर्ताओं की अध्ययनशील प्रवृत्ति बनानी चाहिए और उस अध्ययन द्वारा ही तय हो कि वहां पर अब कितना और किस प्रकार का कार्य करने की आवश्यकता है। किसी भी बस्ती में प्रवेश करने के लिए संस्कार केन्द्र, शिशु मंदिर, चिकित्सा केन्द्र आदि चलाना ठीक है, परंतु अध्ययन के आधार पर सेवा बस्ती की अन्य समस्याओं का पता लगाना चाहिए। अपने कार्यकर्ताओं में समाज की समस्याओं का अध्ययन कर उनके निराकरण की योजना बनाने की प्रवृत्ति विकसित हो, इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इसका सूत्र है-'समस्या केन्द्रित चिंतन हो और परिणाम केन्द्रित योजना बने' इससे एक निश्चित समयावधि में अपेक्षित परिणाम प्राप्त किया जा सकते हैं।■

भारत

राष्ट्रीय सेवा भारती
क्षेत्र-प्रान्त रचना
जम्मू-कश्मीर
हिमाचल
पंजाब
दिल्ली
उत्तराखण्ड
हरियाणा
मेरठ
ब्रज
जोधपुर
जयपुर
चितौड़
अवध
गोरक्ष
कानपुर
काशी
उत्तर बिहार
दक्षिण बिहार
झारखण्ड
उत्तर बंग
मध्य बंग
दक्षिण बंग
अरुणाचल
उत्तर असम
मणिपुर
त्रिपुरा
दक्षिण असम
मध्य भारत
महाकोशल
मालवा
गुजरात
सौराष्ट्र
छत्तीसगढ़
ओड़िशा पश्चिम
ओडिशा पूर्व
विदर्भ
देवगिरी
पश्चिम महाराष्ट्र
तेलंगाणा
आन्ध्र
कोंकण
कर्नाटक उत्तर
कर्नाटक दक्षिण
उत्तर तमिलनाडु
दक्षिण तमिलनाडु
केरल
क्षेत्र
उत्तर
पश्चिम उत्तर
मध्य
पश्चिम
दक्षिण मध्य
दक्षिण
पश्चिम उ.प्र.
पूर्वी उ.प्र.
उत्तर पूर्व
पूर्व
असम

प्रान्तशः सेवा कार्य

क्षेत्र	प्रान्त	शिक्षा	स्वावलंबन	स्वास्थ्य	सामाजिक	कुल
दक्षिण	केरल	1629	58	403	422	2512
	दक्षिण तमिलनाडु	479	1312	238	701	2730
	उत्तर तमिलनाडु	792	25	49	40	906
दक्षिण मध्य	दक्षिण कर्नाटक	2408	411	265	543	3627
	उत्तर कर्नाटक	755	65	127	50	997
	आन्ध्र प्रदेश	873	15	326	316	1530
	तेलंगाना	1162	68	113	759	2102
पश्चिम	कोंकण	733	49	1106	148	2036
	पश्चिम महाराष्ट्र	639	179	1382	166	2366
	देवगिरी	92	244	630	95	1061
	गुजरात	740	36	846	141	1763
	सौराष्ट्र	136	5	312	38	491
	विदर्भ	1135	43	382	97	1657
मध्य	मालवा	681	214	142	379	1416
	मध्य भारत	1259	310	448	785	2802
	महाकौशल	787	129	355	105	1376
	छत्तीसगढ़	699	63	361	332	1455
उत्तर पश्चिम	चित्तौड़	2101	113	445	217	2876
	जयपुर	501	53	60	99	713
	जोधपुर	380	35	49	23	487
उत्तर	दिल्ली	354	267	107	93	821
	हरियाणा	286	188	74	99	647
	पंजाब	444	45	57	37	583
	जम्मू-कश्मीर	65	35	17	57	174
	हिमाचल	89	17	59	18	183
पश्चिम उ.प्र.	उत्तराखण्ड	583	81	409	51	1124
	मेरठ	334	155	90	217	796
	ब्रज	235	98	151	92	576
पूर्वी उ.प्र.	कानपुर	285	116	46	81	528
	अवध	380	60	60	93	593
	काशी	326	54	25	73	478
	गोरक्ष	405	67	46	27	545
उत्तर पूर्व	उत्तर बिहार	274	195	23	24	516
	दक्षिण बिहार	416	13	28	6	463
	झारखण्ड	873	1360	32	25	2290
पूर्व	पश्चिम ओड़िशा	168	666	96	51	981
	पूर्व ओड़िशा	96	484	148	27	755
	दक्षिण बंग	259	8	20	13	300
	मध्य बंग	341	22	11	8	382
	उत्तर बंग	219	13	40	8	280
असम	उत्तर असम	1189	661	2275	55	4180
	अरूणाचल	41	3	70	0	114
	दक्षिण असम	117	10	79	13	219
	मणिपुर	26	4	6	0	36
	त्रिपुरा	85	4	4	2	95
कुल	नियमित सेवा कार्य	25871	8053	12012	6626	52562
	सेवा गतिविधि	4110	3023	17282	45965	70380
	कुल सेवा कार्य	29981	11076	29294	52591	122942

शिक्षा आयाम

बाल संस्कार केन्द्र, सिरोही, राजस्थान

शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है। इसलिए शिक्षा समाज की प्रथम आवश्यकता है। भारत के गुरुकुलों में ऋषियों-मुनियों ने भारत के स्व (selfhood) के विचार-दर्शन और एवं उसकी पूर्ति के लिए उन्नत शिक्षा प्रणाली की स्थापना की है। समाज हित में व्यक्ति निर्माण, शिक्षा का केन्द्रीयभाव रहा है। भारत की उज्जवल विरासत, परम्पराएं, संस्कृति के प्रति निष्ठा रखने वाली शिक्षा सभी को मिले, इस उद्देश्य से सम्पूर्ण भारत के शहरों की पिछड़ी बस्तिओं, सुदूरवर्ती वनांचलों में तथा शिक्षा से वंचित ग्रामीण क्षेत्र के लिए संघ के स्वयंसेवकों ने सेवा भारती, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम तथा विश्व हिन्दू परिषद जैसे कई संगठनों के माध्यम से शिक्षा के अवसर सर्व-सुलभ किये हैं। शिक्षा आयाम के प्रमुख प्रकल्प जिनका स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राथमिकता से संचालन किया जा रहा है:-

बाल संस्कार केन्द्र / बालगोकुलम : कुल केन्द्र संख्या :- 14226

6 से 14 वर्ष आयु के बालक-बालिकाओं को अपनी संस्कृति तथा भारत के महापुरुषों के श्रेष्ठ जीवन का परिचय कराते हुए उनके जीवन निर्माण के उद्देश्य से बाल संस्कार केन्द्र चलाये जाते हैं। ऐसे केन्द्र सप्ताह में एक बार अथवा प्रतिदिन भी बस्ती में 20 से 40 बालक-बालिकाओं के एकत्रीकरण के साथ चलते हैं। किसी योग्य शिक्षक/शिक्षिका के सान्निध्य में देशभक्ति-गीत, कहानी, कला-संस्कृति प्रशिक्षण तथा खेल गतिविधियों के साथ विद्यालयीन अध्ययन भी करते हैं।

पाठदान केन्द्र / ट्यूशन केन्द्र : कुल केन्द्र संख्या :- 3413

बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों का शिक्षा स्तर उन्नत हो इस दृष्टि से बस्तियों में दैनिक पाठदान केन्द्र चलाये जाते हैं। इनमें प्रशिक्षित शिक्षक/शिक्षिकाओं के द्वारा गणित विज्ञान तथा अंग्रेजी इत्यादि विषयों के शिक्षण के साथ देश भक्ति व उत्तम संस्कार विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियां भी चलती हैं।

अभ्यासिका / Study Room : कुल केन्द्र संख्या :- 909

नगरों एवं महानगरों में हजारों लोग पिछडी बस्ती, झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करते हैं। अत्यन्त कम स्थान में ही परिवारों को अपनी दिनचर्या पूर्ण करनी होती है। परिसर का वातावरण शोर भरा रहता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी ठीक प्रकार से पढ़ नहीं पाते हैं। इनकी पढ़ाई ठीक प्रकार से हो, इस निमित्त अभ्यासिका (study room) का संचालन किया जाता है। विद्यार्थियों को निजी अध्ययन के लिए विशाल कक्ष में टेबल कुर्सी, प्रकाश व्यवस्था, पंखा, पेयजल तथा आवश्यक पुस्तक ग्रंथालय आदि सुविधाएं नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं।

शिक्षा के उपक्रम

- शिक्षा सामग्री वितरण
- परीक्षा मार्गदर्शन शिविर
- फीस सहायता
- व्यक्तित्व विकास शिविर

छात्रावास : कुल केन्द्र संख्या :- 643

सेवा भारती, हरियाणा

सुदूरवर्ती ग्रामों से प्रतिभावान बालक-बालिकाओं को चयन कर बड़े नगरों में संचालित छात्रावासों में प्रवेश दिया जाता है। इससे उनको सर्वांगीण विकास का अवसर मिलता है। प्राकृतिक आपदा, कोरोना आदि कारणों से अनाथ एवं निराश्रित हुए बच्चों के लिए भी अच्छी संख्या में छात्रावास चलाये जाते हैं।

विद्यालय : कुल केन्द्र संख्या :-1056

शहरों में महंगी शिक्षा के कारण निम्न आय वर्ग के परिवार चाहकर भी अपने बच्चों को अच्छे विद्यालय में प्रवेश नहीं करवा पाते हैं। उन बच्चों की शिक्षा को सतत् रखने के लिए उनकी बस्तियों के ही निकट विद्यालय संचालित किये जाते हैं।■

स्वावलम्बन आयाम

स्वयं सहायता समूह – बारा, राजस्थान

'नहीं दरिद्र कोऊ, दुखी ना दीना'

वही व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र स्वाभिमान के साथ खड़ा हो सकता जो आर्थिक रूप से स्वावलम्बी हो। इस संदर्भ में हम भारत के अर्थव्यवस्था की बात करें तो हम उत्तरोत्तर प्रगति कर विश्व पटल पर चतुर्थ सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं। भारत की 65 प्रतिशत जनसंख्या 15 से 60 वर्ष कार्यशील आयु वर्ग की है। यह जनसंख्या अगर सम्पूर्ण रोजगार युक्त हो जाए तो हमारी अर्थव्यवस्था 3.5 ट्रिलियन से बढ़कर 40 ट्रिलियन हो सकती है। ज्ञात रहे अमेरिका की अर्थव्यवस्था 20 ट्रिलियन ही है। रोजगार के अवसरों को तलाशना भी होगा और तराशना भी होगा। हमारे सेवा संगठन विकास की मुख्य धारा से पिछड़ चुके वर्ग के लिए स्वावलम्बन आयाम के माध्यम से रोजगारन्मुख विविध सेवा केन्द्रों का संचालन कर रहे हैं। निम्न आय वर्ग के लिए आर्थिक स्वावलम्बन की दृष्टि से चलाए जा रहे हैं उपक्रमों को तीन श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है –

कौशल विकास - सेवा द्वारा स्वरोजगार हेतु

- घरेलू उपकरण रिपेयरिंग, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण रिपेयरिंग, नल, बिजली फिटिंग, ऑटोमोबाइल आदि।
- सर्विस – केटरिंग, होम नर्सिंग, बाल कटिंग, मेहंदी, ब्युटीपार्लर आदि

उत्पादन (Production)

- घरेलू कुटीर उद्योग तथा स्वयं सहायता समूह के माध्यम से घरेलू आवश्यकताओं और सजावटी सामग्री का उत्पादन इत्यादि।
- पापड़, बड़ी, अचार मसाले साबुन इत्यादि
- सिलाई प्रशिक्षण एवं वस्त्र निर्माण, सौंदर्य प्रसाधन
- हस्तकला, हस्तशिल्प एवं सजावटी सामग्री

स्वावलम्बन के उपक्रम

- व्यवसाय प्रशिक्षण शिविर
- पंचगव्य उत्पादन शिविर
- परिचारिका प्रशिक्षण
- जैविक खाद निर्माण

पर्व एवं त्यौहार आधारित उत्पाद एवं प्रशिक्षण

क्र.सं.	उत्पाद निर्माण प्रकार	स्थान	प्रान्त
1.	राखी	865	पश्चिमी महाराष्ट्र, देवगिरी, गुजरात, मालवा, मध्य भारत, जोधपुर, चित्तौड़, दिल्ली, बृज, अवध, काशी, गोरखपुर प्रान्तों में विशेष प्रभावी कार्य है।
2.	घरेलू उपकरण रिपेयरिंग, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण रिपेयरिंग, नल, बिजली फिटिंग, ऑटोमोबाइल आदि का प्रशिक्षण।	63	
3.	सिलाई प्रशिक्षण	1330	
4.	हस्तशिल्प	345	
5.	गोमय, मिट्टी शिल्प	43	
6.	मेंहदी, ब्यूटीपार्लर	276	
7.	विद्युतमाला (झालर) निर्माण	157	
8.	सजावट सामग्री निर्माण	232	
9.	दीपावली दीप निर्माण	387	
10.	मिठाई-नमकीन आदि निर्माण	418	
11.	जैविक खाद निर्माण प्रशिक्षण	389	

स्वयं सहायता समूह - कुल समूह :- 5258

स्वावलम्बन प्रकल्प आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ समाज में संस्कार, संगठन व परिवर्तन के कारक भी बन रहे हैं। दक्षिण तमिलनाडु, कर्णाटक दक्षिण, मध्य भारत, उड़ीसा पश्चिम, उड़ीसा पूर्व, उत्तर असम में प्रभावी कार्य हैं। ■

राखी निर्माण

शिक्षा एवं स्वावलम्बन

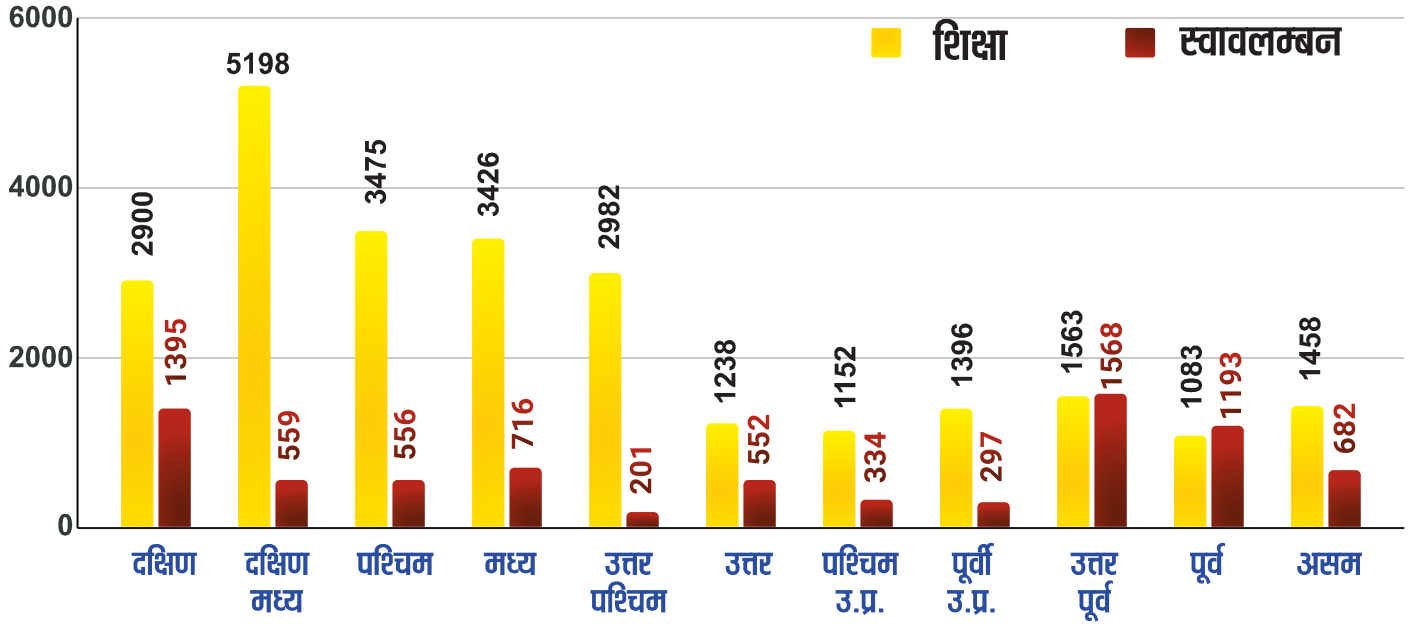

स्वास्थ्य एवं सामाजिक

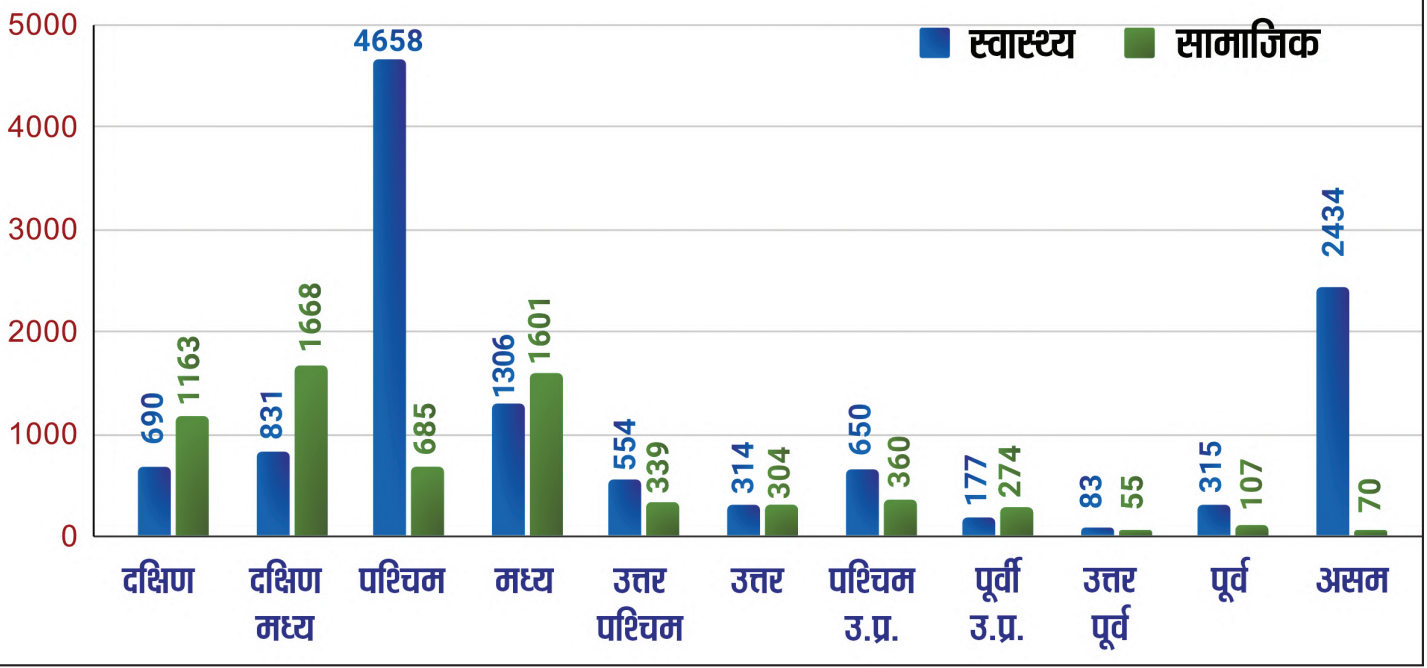

सामाजिक आयाम

दत्तक ग्रहण केन्द्र, गदग, कर्नाटक

बाह्य विविधता के बावजूद अंतर्निहित एकता हिन्दू जीवन शैली की नींव रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के समय से ही अपने स्वयंसेवकों में, जाति, प्रांत, सामाजिक स्थिति आदि के आधार पर बिना किसी भेदभाव के, सामाजिक समरसता के मूल्य को विकसित करता रहा है। समरसता का यही सिद्धान्त सेवा भारती और अन्य सभी मातृ संगठनों का केन्द्रीय भाव रहा है। इसलिए समाज के सभी आयु समूहों के लिए समरसता निर्माण करने वाले सेवा कार्य प्रारम्भ किये हैं।

किशोरी विकास केन्द्र : कुल केन्द्र संख्या :- 1068

पिछड़ी बस्तियों एवं सुदूर वनांचलों में रहने वाली किशोरियों के सर्वांगीण विकास के लिए किशोरी विकास केन्द्र संचालित किये जाते हैं। इस पत्रिका में अलग से इस विषय पर प्रकाश डाला गया है।

कन्यापूजन

हिन्दू समाज में कन्या को देवी स्वरूप माना गया है। इसलिए नवरात्री पर्व के अवसर पर समाज के सभी वर्गों की कन्याओं के लिए सामूहिक कन्या पूजन के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। अनेक स्थानों पर सर्व समाज के प्रतिष्ठित जन न केवल कन्याओं का पूजन करते हैं बल्कि बेटियों के शिक्षण, स्वास्थ्य आदि की जिम्मेदारी भी उठाते हैं। गत वर्ष 7578 स्थानों पर 1,56,681 कन्याओं का पूजन किया गया।

मातृछाया : कुल केन्द्र संख्या :- 37

समाज द्वारा त्यक्त अथवा अवांछित 5 वर्ष से कम आयु के शिशुओं के पालन हेतु मातृछाया केन्द्र संचालित किये जाते हैं। शासकीय नियमानुसार योग्य परिवारों में उनका पुनर्स्थापना किया जाता है। इसके अलावा बड़े बच्चों के लिए निराश्रित बालक-बालिका सदन (20 केन्द्र) एवं अनाथालय (67 केन्द्र) भी संचालित किऐ जा रहे हैं।

दीप पूजा (साप्ताहिक) : कुल केन्द्र संख्या :- 159

महिलाओं का सामाजिक संगठन करने के उद्देश्य से अपने गांव या बस्ती के मंदिर में सभी आयु की महिलाएं प्रतिमास पूर्णिमा को संध्या काल में दीप पूजन के लिए एकत्र होती हैं। महिलाओं के बार बार मिलते रहने के फलस्वरूप भजन मण्डली, स्वयं सहायता समूह, संस्कार केन्द्र जैसे विविध प्रकल्प एवं उपक्रम प्रारंभ होने लगते हैं।

झोला पुस्तकालय : कुल केन्द्र संख्या :- 110

नगरों की सेवा बस्ती के बालकों में स्वाध्याय एवं संस्कार वर्धन हेतु यह प्रकल्प चलाया जाता है। अपना एक कार्यकर्त्ता संस्कारप्रद एवं उपयोगी लगभग 50 चुनी हुई पुस्तकें झोली (बैग) में लेकर प्रस्तावित बस्ती के विविध घरों में जाता है। पढ़ने को पुस्तकें देकर अगली भेंट के समय पुस्तक के बारे में पूछताछ करता है। ■

भजन मण्डली : कुल केन्द्र संख्या :- 2648

परिवार परामर्श केन्द्र : कुल केन्द्र संख्या :-77

अन्नदानम केन्द्र : कुल केन्द्र संख्या :- 180

सामाजिक उपक्रम

- कन्यापूजन
- सामूहिक विवाह
- मंदिर स्वच्छता
- सार्वजानिक स्वच्छता
- जल संवर्धन तालाब निर्माण
- सड़क निर्माण
- सामूहिक उत्सव
- पौधारोपण
- खेलकूद प्रतियोगिता
- स्वेटर कम्बल वितरण
- अन्नदान / जलपान वितरण

स्वास्थ्य आयाम

देसिय सेवा भारती, केरल

सामाजिक सुहृदय की पहली कामना **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'** है। जहां स्वयंसेवक रहते हैं वहां आस-पास के स्वास्थ्य पीड़ितों के लिए स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराते हैं। नर सेवा नारायण सेवा के भाव से स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रकल्प एवं जागरण गतिविधियों का आयोजन व्यवस्थापन करते हैं। इस कार्य को अधिक प्रभावकारी एवं परिणामकारी बनाने के लिए पंजीकृत संस्थाओं के माध्यम से चलित चिकित्सालय, चिकित्सा केन्द्र, अस्पताल आदि का संचालन किया जाता है। समय-समय पर स्वास्थ्य जांच शिविर एवं स्वास्थ्य यात्राओं का आयोजन भी किया जाता है।

आरोग्य मित्र या आरोग्य रक्षक : कुल केन्द्र :- 8421

सुदूरवर्ती बस्तियां जहां स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं है वहां प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु आरोग्य रक्षक योजना संचालित है। उसी स्थान के महिला या पुरुष कार्यकर्ता को प्रशिक्षण उपरान्त कुछ मौसमी बीमारियों के लिए सामान्य एवं परम्परागत औषधीयों के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है। असम, गुजरात, देवगिरी, पश्चिम महाराष्ट्र, कोंकण, छत्तीसगढ़, चित्तौड़, आंध्र, महाकौशल एवं उत्तराखण्ड प्रान्तों में विशेष कार्य है।

चलित चिकित्सालय : कुल केन्द्र :- 406

जनजाति क्षेत्र, ग्रामीण तथा नगरों की पिछड़ी बस्तियों के निवासी बुजुर्ग, महिला, बच्चे, दिव्यांग जन प्रायः रोग की प्राथमिक चिकित्सा से वंचित रह जाते हैं। स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र का दूर होना, वहां पहुंचने के साधनों का अभाव, गरीबी, अशिक्षा, मिथ्या धारणाएं रोगों के बढ़ने का कारण बनती है। इन स्थानों पर चलित चिकित्सा वाहन प्रति सप्ताह पहुंचने से समय पर उपचार प्राप्त हो जाता है।

स्वास्थ्य सेवा यात्राएं

स्थानीय सेवा संस्थाओं द्वारा वर्ष में एक बार दूरस्थ ग्रामीण एवं पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा यात्राओं का आयोजन होता है। शहरों तथा मेडिकल कॉलेजों से डॉक्टर तथा मेडिकल छात्र इस आयोजन में अपनी सेवाएं देते हैं। गंभीर रोगियों को बड़े अस्पतालों में लाकर स्थाई चिकित्सा की व्यवस्था भी की जाती है। असम में धनवंतरी सेवा यात्रा, जम्मू में कश्यप ऋषि सेवा यात्रा, अवध में गोरक्ष सेवा यात्रा, उत्तर बिहार में जानकी स्वास्थ्य यात्रा एवं राजस्थान में राणा पुंजा सेवा यात्रा के अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं।

स्वास्थ्य जांच शिविर

मातृ संगठन तथा नगरों की शाखाएं अपनी बस्ती में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन करती हैं। इस वर्ष 6066 शिविरों में 549049 व्यक्तियों को जांच पश्चात् उचित चिकित्सा सहायता दी गई।

दिव्यांग सेवा केन्द्र : कुल केन्द्र :- 61

दिव्यांग जनों को उनके दैनिक उपयोगी उपकरण एवं उनके उपयोग के लिए प्रशिक्षण प्रदान किये जाते हैं।

स्थाई चिकित्सालय

पंजीकृत सेवा संस्थाओं द्वारा 48 बड़े चिकित्सालय एवं 425 छोटे चिकित्सा केन्द्र चलाये जा रहे हैं।

परामर्श केन्द्र, साकेत नगर, प्रयाग

स्वास्थ्य उपक्रम

- रक्तदान शिविर
- स्वास्थ्य जांच शिविर
- योग शिविर
- दिव्यांग उपकरण वितरण शिविर
- नेत्र जांच शिविर
- रक्तदाता गठ सूची
- व्यसन मुक्ति शिविर
- प्रथमोपचार प्रशिक्षण शिविर

छात्रावास

एक अच्छे और सच्चे भारत का निर्माण

जयदेव (दादा), अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख
राष्ट्रीय सेवा भारती

विद्यार्थी जीवन छात्रों के जीवन का वह समय है जिसमें उसके चरित्र, व्यवहार तथा आचरण को जैसा चाहे वैसा रूप दिया जा सकता है। प्राचीन काल से ही हमारे भारत में गुरुकुल की परम्परा रही है। गुरुकुल में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ धर्म, संस्कृति, सामाजिक, मानसिक, शारीरिक ज्ञान की शिक्षा भी दी जाती थी। परंतु, आज हम जिस समाज में रह रहे हैं, तथा जिस शिक्षा प्रणाली द्वारा अध्ययन कर रहे हैं उसमें यह संभव नहीं है। वह शिक्षा प्रणाली हमें कक्षा में प्रथम आना तथा अच्छे अंक लाना तो सिखाती है पर वह हमें समाज से दूर कर रही है। हम समाज के लिए तथा समाज हमारे लिए हो; यह प्रयास कहीं छूट रहा है। हमारा समाज वहां रह रहे व्यक्तियों से बनता है। व्यक्ति कैसी सोच रखते हैं इस पर निर्भर करता है कि उसे यदि अच्छा ज्ञान मिलता है तो आगे चलकर वह एक अच्छा सामाजिक व्यक्ति बन सकता है। इसी कल्पना को पूर्ण करने के लिए प्राचीन काल में गुरुकुल की व्यवस्था थी। छात्रावासों का उद्देश्य शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा बौद्धिक विकास हो यह प्रयास है। विद्यार्थी अपने समाज से जुड़े अपने समाज के बारे में सोचे, अपने समाज को अपनाए, अपनी प्राचीन संस्कृति का अध्ययन करें।

छात्रावास के सभी छात्र पढ़ाई के साथ-साथ अपना पूरा कार्य स्वयं करते हैं, स्वयं कार्य करने से उनके अंदर आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा आती है। उन्हें जिंदगी में किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। विद्यार्थी के जीवन में छात्रावास का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

छात्रावास को चलाने के लिए छात्रावास के कार्य, समय सारणी स्वयं छात्रों द्वारा ही बनाई जाती है ताकि उन्हें वह समय सारणी को बोझ न मानकर आनंद से पालन करें, जिसके परिणाम स्वरूप वह अपनी जिंदगी में स्वयं अनुशासित होना सीखते हैं।

छात्रावास में होने वाले हर कार्यक्रम का नियोजन भी छात्रावास के छात्रों द्वारा ही किया जाता है, इससे वह स्वयं निर्णय लेना सीखते हैं।

वर्षों पहले पूर्वोत्तर के राज्यों में अशांति के कारण बच्चों का भविष्य अंधकारमय था। शिक्षा के लिए उचित वातावरण नहीं था। ऐसे में सेवा भारती, विश्व हिन्दू परिषद्, राष्ट्र सेविका समिति, वनवासी कल्याण आश्रम जैसे संगठनों ने वहां के विद्यार्थियों के लिए भारत प्रमुख शहरों में छात्रावास प्रारंभ किये। इन छात्रावासों से पढ़े छात्रों ने अपने समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। इन विद्यार्थियों के करण आज सम्पूर्ण पूर्वोत्तर में भारत के साथ एकात्मता की अनुभूति स्पष्ट दिखाई दे रही है एवं वहां के निवासियों में भारत प्रेम देखने को मिलता है।

देश की पिछड़ी बस्ती, सुदूर वनांचल एवं अभावग्रस्त क्षेत्रों के विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा पूर्ण करने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए सम्पूर्ण भारत के प्रमुख शहरों दिल्ली, जयपुर, इंदौर, उज्जैन, भोपाल, मेरठ, कानपुर, बरेली, कर्णावती (अहमदाबाद), कोलकाता, गुवाहाटी, बेंगलुरु, मंगलूर, भाग्यनगर (हैदराबाद), संभाजी नगर, चेन्नई, पुणे नागपुर एवं जम्मू इत्यादि बड़े शहरों सहित अनेक स्थानों पर इनका संचालन होता है। ऐसे छात्रावास समाजोत्थान के केन्द्र के रूप में जाने जाते हैं। हमारा यह प्रयास छात्रावास के माध्यम से संभव हो सका है।

छात्रावास से पढ़कर निकले सैंकड़ों छात्र आज भारत में महत्वपूर्ण स्थानों पर कार्यभार संभाल रहे है एवं देश के कई मुख्य निर्णयों मे अपनी भागीदारी दे रहे हैं।

छात्रावासों का एक ही उद्देश्य है 'एक अच्छे और सच्चे भारत का निर्माण करना'।

मातृ संगठन	छात्रावास	बालक	बालिका	निराश्रित सदन	बालक	बालिका	अनाथालय	बालक	बालिका	कुल छात्रावास
दीनदयाल शोध संस्थान	3	319	100							3
राष्ट्रीय सेवा भारती	177	4436	1838	20	224	262	68	867	823	265
राष्ट्र सेविका समिति	13	1	192				2		48	15
सक्षम							3	41	15	3
वनवासी कल्याण आश्रम	220	5104	1324							220
विद्या भारती	59	2825	802							59
विश्व हिन्दू परिषद	61	3052	1768	3	36	37	14	353	222	78
कुल	533	15737	6024	23	260	299	87	1261	1108	643

छात्रावासों में अध्ययन करने वाले कुल बालक : 17258 एवं कुल बालिकाएं : 7431 कुल योग : 24689 (बालक-बालिकाएं)

समृद्ध भारत की

समर्थ किशोरी

अमिता जैन, उपाध्यक्ष
राष्ट्रीय सेवा भारती

किशोरी विकास

किशोरावस्था का संक्रमण काल अत्यधिक संवेदनशील होता है। इस काल में मिला मार्गदर्शन ही व्यक्ति के जीवन की दिशा तय करता है। इस समय उचित पालन-पोषण, उपयुक्त वातावरण व अवसर प्रदान कर उन्हें एक अच्छे इंसान के रूप में विकसित कर सकते हैं। अभिभावकों तथा समाज की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती हैं जब बात किशोरियों की हो, क्योंकि वो ही भविष्य की माता बनेंगी और भावी परिवार उनकी वजह से ही फलेंगे-फूलेंगे। वे ही समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम होती हैं।

समग्र विकास का अर्थ है हौसलों से परिपूर्ण, आत्मविश्वास से भरी, शारीरिक रूप से पुष्ट, ऊर्जावान, मानसिक रूप से दृढ़, चरित्रवान, बुद्धिमान किशोरी। समग्र रूप से विकसित किशोरी भावी जीवन में स्वयं का व्यक्तित्व विकास करते हुए, एक सफल गृहिणी, समझदार मां और इन सबसे भी बढ़कर एक विवेकशील नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण में सहयोगी होगी। इस महती भूमिका का निर्वहन करने वाली किशोरी का सर्वविकास भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों के आधार पर हो। 'परिवार' इस संस्कृति की विशेषता है और इस संस्कृति में नारी का सम्मानजनक स्थान रहा है।

वंचित, अभावग्रस्त और दुर्बल वर्ग के बीच सेवा बस्तियों में कार्य करते समय ध्यान आता है कि बस्तियों में रहने वाली कई बालिकाएं शाला त्यागी हैं, कुंठाग्रस्त हैं, हीनभावना से ग्रसित हैं। आधी-अधूरी जानकारियां उन्हें विभिन्न माध्यमों से मिल रही है पर वे सही-गलत का निर्णय नहीं कर पाती है। साथ ही स्नेह व उचित मार्गदर्शन के अभाव में कई बार गलत रास्तों पर भी जा सकती है। बस्तियों में उनके घरों में ऐसा माहौल ही नहीं है कि वे खुलकर अपनी बात किसी से कह सकें, अपनी जिज्ञासा शांत कर सकें। इन किशोरियों में स्वयं के प्रति विश्वास जगाने व वांछित विकास करने के लिए बस्तियों में स्थायी नियमित केन्द्र चलाये जाते हैं।

2015 से किशोरी विकास योजना पर कार्य प्रारम्भ किया गया। हैदराबाद, कलबुर्गी, पुणे, सोलापुर, भोपाल, इंदौर, एवं मेरठ जैसे अनेक शहरों में किशोरी विकास केन्द्रों से अच्छे परिणाम आये हैं। किशोरियों में वांछित परिवर्तन देखकर पूरे देश में इन प्रकल्पों को खड़ा करने की योजना पर किशोरी विकास कार्य आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में 32 प्रांतों में 1068 किशोरी विकास प्रकल्प चल रहे हैं।

इन केन्द्रों के माध्यम से बस्तियों में शालात्यागी बालिकाओं की संख्या घट रही है एवं अब वे पहले से अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हो रहीं हैं। इन केन्द्रों पर मेहंदी लगाना, पर्स-बेग बनाना, सिलाई आदि का प्रशिक्षण भी मिलने से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। उनमें जागरूकता आने व रचनात्मक कार्यों में लगने से गलत रास्तों पर जाने की संभावना कम हो गई है। हमारे किशोरी विकास केन्द्रों से शिक्षित किशोरियां अब नियमित केन्द्रों का संचालन कर रही हैं जिससे वे आज समाज में नेतृत्व करने की स्थिति में भी आ रहीं हैं। बस्तियों में होने वाले विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विभिन्न विधाओं के प्रदर्शन या संचालन भी करने लगी हैं।

जहां अभी केन्द्र नहीं आरंभ हो सके हैं वहां व्यक्तित्व विकास शिविरों के माध्यम से या विद्यालयों में व्याख्यान या कार्यशालाओं के माध्यम से भी किशोरी विकास का कार्य चल रहा है। इस कारण से लव जिहाद प्रकरणों के प्रति भी जागरूकता आई है। ■

स्वयंसेवकों की

'सेवागाथा'

Website: www.sewagatha.org

सच्ची सेवा की प्रेरक कहानियां

विजयलक्ष्मी सिंह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक सर्वांगीण विकास के लिए समाज को शिक्षित, स्वावलम्बी, स्वास्थ्य एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ बनाने ले लिए अनेकों परिणामकारी प्रकल्पों के माध्यम से सेवा कार्य कर रहे हैं। भारतवर्ष का व्याप बहुत विशाल है। अनेकों भाषाओं को बोलने बाले लोग यहां रहते हैं। ऐसे बहु भाषा-भाषी क्षेत्र के स्वयंसेवक एवं समाज में ऐसा भी एक बड़ा वर्ग है जो शिक्षित है, सुविधा सम्पन्न है किंतु सेवा से उसका दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं है; ऐसे प्रेरणादायक समोजोत्थान के प्रयासों को अपनी भाषा में जानना चाहते हैं। दुराग्रही मिडिया संघ के स्वयंसेवकों के शुभ एवं परिणामकारी सेवा कार्यों को अपने माध्यमों पर उचित स्थान न देकर, समाज के अनेकों सेवा भावी सज्जनों एवं युवाओं को यह आश्वासन देने में असफल है कि समाज में विध्वंष से अधिक निर्माण कार्य चल रहे हैं। ऐसे कुछ कारणों से यह संभ्रांत वर्ग इस जानकारी, परिस्थिति एवं अनुभूति के अभाव के कारण सेवा कार्यों से जुड़ नहीं सका। पीड़ित जनों का दु:ख तथा उनके लिये चल रहे सेवाकार्य देखकर इन के मन मे संवेदना जागृत होती है और ये लोग सेवा-कार्यों से जुड़ते हैं। विशाल भारत में फैले लाखों लोग चाहते हैं कि, देश के लिए कुछ अच्छा कर सकें, किसी के आँसू पोंछ सकें, किसी का सहारा बन सकें। किन्तु आवश्यकता है कि कोई उनका विश्वास जीते और उन्हें साथ में जोड़े।

समाज के वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित एवं पीड़ित लोगों की अहर्निश सेवा में लगे स्वयंसेवक और नर नारायण की सेवा में जीवन आहूत करने वाले सेवाव्रतियों द्वारा की गई, 'सच्ची सेवा की प्रेरक कहानियां' जन-जन तक उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध हो; इस उद्देश्य से जुलाई 2017 में 'सेवागाथा' नाम से वेबसाइट का शुभारम्भ किया गया। इन कहानियों को वेबसाइट, मोबाईल एप तथा सेवागाथा सोशल मिडिया द्वारा सर्व सुलभ उपलब्ध कराया जाता है। सेवागाथा का एंड्राइड और आईओएस एप्लीकेशन भी प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। सेवागाथा की कहानियां 9 प्रमुख भाषाओ में वेबसाइट पर प्रकाशित हो रहीं हैं :- हिन्दी, मराठी, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, तेलगु, उड़िया, बांग्ला एवं अंग्रेजी। शीघ्र ही तमिल एवं पंजाबी सहित अन्य भाषाओं में भी कहानी प्रकाशित करने की योजना है।

सेवागाथा पर तीन स्तंभों पर कहानी उपलब्ध होती हैं :

परिवर्तन यात्रा : कुल कहानी - 66

संघ के स्वयंसेवकों द्वारा समाजोत्थान के परिणामकारी सेवा कार्यों की कहानियां इस स्तम्भ में पढ़ने को मिलती हैं।

समर्पित जीवन : कुल कहानी - 11

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में तो ऐसे समर्पित जीवनव्रतियों की बहुत लंबी श्रृंखला है जिन्होंने संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार के प्रसिद्धि परांगमुखता के सूत्र का पालन करते हुए समाज में परिवर्तन की अद्भुत मिशाल प्रस्तुत की है। इस स्तंभ के तहत कुछ ऐसे ही समर्पित सेवा-व्रतियों से आपका परिचय कराने का प्रयास है।

सेवादूत : कुल कहानी -23

संघ के स्वयंसेवक आपदा में पीड़ितों की सेवा के लिए प्रथम पंक्ति में उपस्थित होते हैं। ऐसे ही आपदा राहत कार्यों की अद्भुत कहानियां इस आलेख में पढने को मिलती हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर फॉलोअर्स और रीच

फेसबुक	71,615	20 लाख से अधिक
कू	1,90,900	3 लाख से अधिक
ट्विटर	11,955	1,88,000 से अधिक
यू ट्यूब	2,390	
इंस्ट्राग्राम	8,921	1,20,000 से अधिक

सेवागाथा पर अब तक कुल 100 कहानियां प्रकाशित हो चुकी है। ये कहानियां ऑडियो के रूप में भी उपलब्ध है। स्पॉटिफाई पर सेवागाथा का चैनल है जिसमें विभिन्न भाषाओं में 195 कहानियों का ऑडियो संस्करण उपलब्ध है। ■

शहरी बाढ़ राहत कार्य, केरल

आपदा प्रबंधन

प्रोफेसर सतीश मोढ़

भौगोलिक विविधता वाले विशाल देश में प्राकृतिक आपदाओं के कारण लगभग प्रतिवर्ष किसी न किसी क्षेत्र में बाढ़, चक्रवात, सूखा, भूकम्प, महामारी आदि के कारण जन जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। असम, उत्तर बिहार व बंगाल में बाढ़, पूर्वी समुद्र तट, विशेष रूप से बंगाल, ओडिशा और आंध्र के साथ-साथ पश्चिमी तट भी चक्रवात के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। वहीं राजस्थान जैसा सूखा प्रभावित क्षेत्र भी अब बाढ़ का भी सामना कर रहा है। कभी-कभी आगजनी अथवा रेल बस आदि दुर्घटनाओं में त्वरित सेवा की आवश्यकता रहती है।

संघ के स्वयंसेवक इस तरह की आपदाओं के दौरान राहत और बचाव कार्य प्रथम पंक्ति में उपस्थित रह कर करते आये हैं। स्वयंसेवकों को आपदा तैयारियों में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिलता है, फिर भी वे ऐसी स्थितियों में लोगों की मदद करने में तत्पर रहते हैं। यह उनकी दैनिक शाखाओं के संस्कारों के कारण ही संभव होता है।

आपदा राहत एवं प्रबंधन प्रशिक्षण

आपदा राहत एवं प्रबंधन के प्रशिक्षण की आवश्यकता को समझ कर राष्ट्रीय सेवा भारती ने स्वयंसेवकों को इस कार्य में दक्ष करने हेतु आपदा प्रबंधन का पाठ्यक्रम बना कर प्रमुख स्थानों पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गए।

उत्तर में गाज़ियाबाद, पूर्व में भुवनेश्वर और पश्चिम भाग में मुंबई जैसे प्रमुख स्थानों पर आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण हेतु तीन शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में विभिन्न प्रान्तों से 250 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। भारत के सभी 350 आपदा संभावित जिलों में 'आपदा प्रबंधन टोली' बनाने का कार्य इस वर्ष पूरा किया जायेगा।

आपदा राहत और पुनर्वास : किये गए कार्य

- राहत और बचाव हेतु समाज से आवश्यकतानुसार धन की व्यवस्था।
- भोजन, खाद्यान्न, दूध पाउडर, पानी, कंबल, कपड़े आदि वितरण।
- एम्बुलेंस, नाव, बस, स्ट्रेचर, चिकित्सा उपकरण, डॉक्टरों, नर्सों, रक्तदाताओं आदि की व्यवस्था।
- पीड़ितों को नजदीकी अस्पताल या चिकित्सा केन्द्रों तक पहुंचाकर उपचार।
- टेंट, प्रकाश व्यवस्था, संचार उपकरण, मलबा एवं कीचड़, जमा पानी, गिरे हुए पेड़ों को हटाना।
- शवों (मनुष्यों और जानवरों) की पहचान कर अन्तिम संस्कार।
- एनडीआरएफ/एसडीआरएफ तथा स्थानीय प्रशासन को उनके काम में मदद कर और उन्हें भोजन सहित सभी सहायता प्रदान की जाती हैं।

स्वयंसेवकों द्वारा आपदाओं में सेवा तथा प्रबंधन
कुछ उल्लेखनीय प्रसंग

- 30 अक्टूबर, 2022 गुजरात के मोरबी जिले में मच्छू नदी पर बना केबल पुल टूट गया। यह पुल करीब 200 साल पुराना था। इस हादसे में 100 से ज्यादा लोगों की मृत्यु हो गई। हादसे के वक्त पुल पर 300 से अधिक लोग मौजूद थे। 70 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। कुछ समय में 200 से अधिक स्वयंसेवकों ने वहां पहुंच कर पानी से लोगों को निकाला। घायलों को अस्पताल ले जाया जा सके इस निमित्त प्रशासन की मदद करने के लिए स्वयंसेवकों ने मानव श्रृंखला बनाई। विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने 100 यूनिट से अधिक रक्तदान भी किया।
- 2 मार्च, 2023, इंदौर, में रामनवमी के अवसर पर बेलेश्वर महादेव झूलेलाल मंदिर में हुए इस भीषण हादसे में जमीन घरघरा धंसने से बावड़ी में गिरे 60 लोगों में से 36 लोगों की अकाल मौत हो गई। प्रशासन व सेवा भारती के कार्यकर्ता एक साथ दुर्घटना स्थल पर पहुंचे एवं मिलकर 24 लोगों की जान बचाई।
- 2 जून, 2023 के दिन कोरोमंडल एक्सप्रेस ओडिशा में बालेश्वर के निकट लूपलाइन पर खड़ी एक मालगाड़ी से टकराई और उसके डिब्बे पटरियों से इधर-उधर बिखर गये। बेंगलोर से आ रही तीसरी ट्रेन भी इन डिब्बों से टकरा गई। जानकारी मिलते ही स्वयंसेवकों की टोली घटना स्थल पर पहुंची और बोगियों में फंसे लोगों को बाहर निकालने में प्रशासन के साथ जुट गई। स्वयंसेवकों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया, उनकी सेवा की, परिजनों को सांत्वना दी। उनके चाय-नाश्ते की व्यवस्था की गई। उत्तर असम 6 जिले बाढ़ प्रभावित हुए। बोडोलैंड लखीमपुर में विशेष राहत कार्य किया गया।
- 18 सितम्बर, 2023 के दिन अतिवृष्टि के कारण गुजरात में नर्मदा अपने खतरनाक स्तर को पार कर गई। भृगु वेजलपुर, समेत कुछ गांव व लगभग 76 सोसाइटियों में पानी भर गया। लोगों के पास न रहने की जगह बची थी ना बर्तन थे ना बिस्तर न कपड़े न ही खाने की व्यवस्था। संघ के स्वयंसेवकों ने लगातार एक सप्ताह तक 1000 से अधिक लोगों को अनाज के किट, 6 जगहों पर भोजन, 900 परिवारों को बर्तन व 200 को कंबल बांटे गये। पानी कम होने के बाद हसौद के स्वयंसेवक गन्दगी साफ करने के लिए ट्रैक्टर और जेट पंप लेकर स्वयं सफाई में लग गए

- 4 दिसंबर 2023 को चेन्नई में मिचोंग की चक्रवाती विनाश लीला से चेन्नई के एक हिस्से की सड़के, बिजली के खंभे, पुल, इंटरनेट सेवाएं सब ध्वस्त हो गई। 15 दिनों तक स्वयंसेवक एवं सेवा भारती के कार्यकर्ता भोजन, कपड़ा, बिस्तर एवं दवाइयां साफ पानी की बोतल बांटने के साथ-साथ प्रशासन का सहयोग भी करते रहे। लगभग 3000 कार्यकर्ता जिसमें 500 महिलाएं भी शामिल थी अनवरत लोगों की मदद में जुटे रहे।
- मध्य प्रदेश के हरदा में 6 फरवरी, 2024 को एक पटाखा फैक्ट्री में भीषण धमाका हुआ था। इस धमाके में 11 लोगों की मौत हो गई और 175 से ज्यादा लोग घायल हो गए। धमाका इतना तेज था कि कई किमी. तक इसकी आवाज़ सुनी गई। हरदा व आस-पास के स्वयंसेवक पूरा दिन घायलों एवं उनके परिजनों के साथ कदम से कदम मिलाकर खड़े रहे। गंभीर मरीजों को इंदौर के एम.वाई. अस्पताल में सेवा भारती के कार्यकर्ता मरीज एवं परिजनों के सहयोग के लिए तत्पर रहे।

आपदा से पूर्व विशिष्ट तैयारी

सौराष्ट्र चक्रवात में 10 जिले प्रभावित थे, पूर्व तैयारी अच्छी होने से कोई जनहानि नहीं हुई। पहले से ही आपदा प्रबंधन होने के कारण तटवर्ती क्षेत्रों में चक्रवातीय आसन्न संकट को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मानसून के दौरान भू-स्खलन, बाढ़ और बादल फटने के कारण उत्तराखण्ड में बड़ी संख्या में मकान और पुल ढह गए। 500 से अधिक स्वयंसेवकों ने भोजन, टेंट उपलब्ध करा ठहरने हेतु व्यवस्था की।

कोविड-19 महामारी के समय सेवा

संघ प्रेरित सभी संगठनों ने कोविड महामारी के दोनों कालखण्ड में विश्व का सबसे बड़ा 'सेवा कार्य' किया। लाखों परिवारों को 10 महीने से अधिक समय तक निर्बाध रूप से खाद्यान्न और खाद्य किट उपलब्ध कराये गये। परिवारों के लिए RTPCR परीक्षण शिविर आयोजित किए गए। कोरोना पॉजिटिव मरीजों का पता लगाने और उन्हें अलग करने के लिए दुनिया के सबसे बड़े अभियानों में से एक धारावी, मुंबई (एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी) और पुणे में चलाया गया, जिसमें 76,000 से अधिक व्यक्तिओं की जांच की गई। स्वयंसेवकों द्वारा, डॉक्टरों, नर्सों की सहायता से कोविड देखभाल केन्द्र स्थापित किए गए। राष्ट्रीय सेवा भारती ने ऑक्सीजन सिलेंडर, वेंटिलेटर, पीपीई सूट, भोजन की व्यवस्था की। कोविड पीड़ित हजारों रोगियों की मृत्यु होने पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया। दिल्ली में जब अस्पतालों में रोगी शय्या की कमी होने लगी तो खाली कंटेनरों में रोगी शैय्या की व्यवस्था की और मरीजों को इलाज के लिए भर्ती कराया गया। कोविड-19 के बाद स्वयंसेवकों ने पूरे भारत में विशाल टीकाकरण अभियान चलाया, जिससे सरकार को अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद मिली। ■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व राष्ट्रीय सेवा भारती (सम्बद्ध सेवा संस्थाओं) द्वारा किये गए कोरोना सेवा कार्य

1.	सेवा स्थान	-	85701
2.	सेवारत कार्यकर्ता	-	4,79,949
3.	सेवित परिवार राशन किट	-	1,10,55,450
4.	तैयार भोजन पैकेट	-	7,11,46,500
5.	मास्क	-	62,81,117
6.	स्टे होम (अस्थायी निवास में)	-	1,31,443
7.	अन्य प्रांतीय को सहायता	-	13,30,330
8.	रक्तदान	-	39,851
9.	आयुर्वेदिक काढ़ा	-	36,77,355
10.	घुमन्तु जन सहायता	-	1,36,867

प्रवासी मजदूरों हेतु प्रमुख मार्गों पर सहायता

1.	भोजन वितरण केंद्र	1,341
	सेवित मजदूर	23,65,256
2.	दवा / मेडिकल सहायता केन्द्र	416
	सेवित मजदूर	94,589
3.	बस / रेल आदि पर सहायता केन्द्र	523
	सेवित मजदूर	4,32,835

गत वर्षों की प्रमुख आपदाओं में सेवा कार्य

वर्ष	स्थान	प्रकार	वर्ष	स्थान	प्रकार
1977	तटीय आंध्र प्रदेश	चक्रवात	2005	मुंबई	बाढ़
1979	मोरबी, गुजरात	बाढ़	2013	असम	बाढ़
1987	बिहार	बाढ़	2013	उत्तराखण्ड	बाढ़
1991	उत्तर काशी	भूकम्प	2014	कश्मीर	बाढ़
1993	किल्लारी-लातूर	भूकम्प	2015	चैन्नई	बाढ़
1996	चरकी दादरी	वायुयान हादसा	2018	केरल	बाढ़
1999	तटीय उड़ीसा	चक्रवात	2021	उत्तराखण्ड	बाढ़
2001	कच्छ, गुजरात	भूकम्प	2023	बालासोर	ट्रेन दुर्घटना
2004	तटीय तमिलनाडु	सुनामी			

मातृ संगठन आयामशः सेवा कार्य

क्र.सं.	मातृ संगठन	शिक्षा	स्वावलम्बन	स्वास्थ्य	सामाजिक	कुल
01.	आरोग्य भारती	04	01	70	01	76
02.	भारत विकास परिषद्	32	28	102	63	225
03.	दीनदयाल शोध संस्थान	126	201	54	125	506
04.	राष्ट्रीय सेवा भारती	13122	4556	7343	5808	30829
05.	राष्ट्र सेविका समिति	163	61	99	327	650
06.	सक्षम	11	13	40	33	97
07.	वनवासी कल्याण आश्रम	4168	3043	4220	21	11452
08.	विद्याभारती	6804	42	15	77	6938
09.	विश्व हिन्दू परिषद्	1441	108	69	171	1789
कुल नियमित सेवा कार्य		25871	8053	12012	6626	52562
सेवा गतिविधियाँ		4110	3023	17282	45965	70380
कुल सेवा		29981	11076	29294	52591	122942

कुल सेवा कार्य

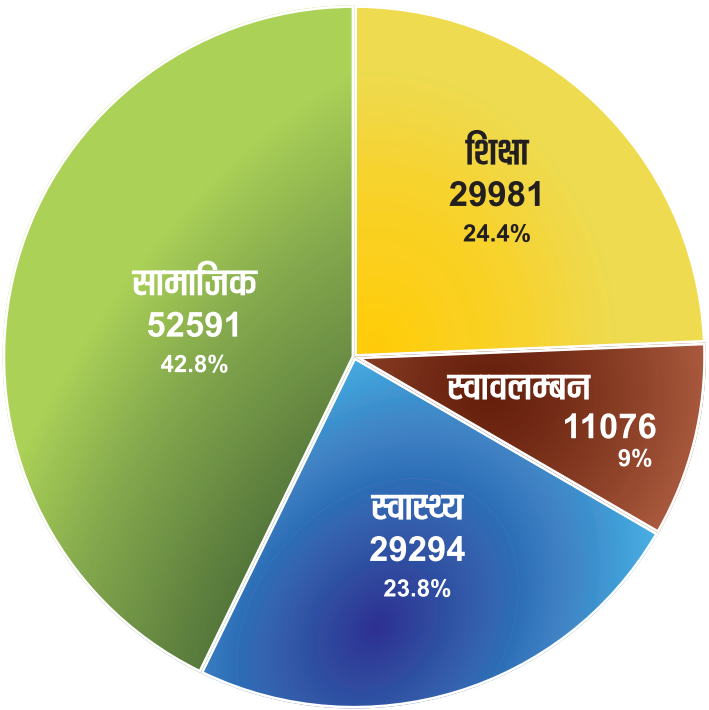

नियमित सेवा कार्य

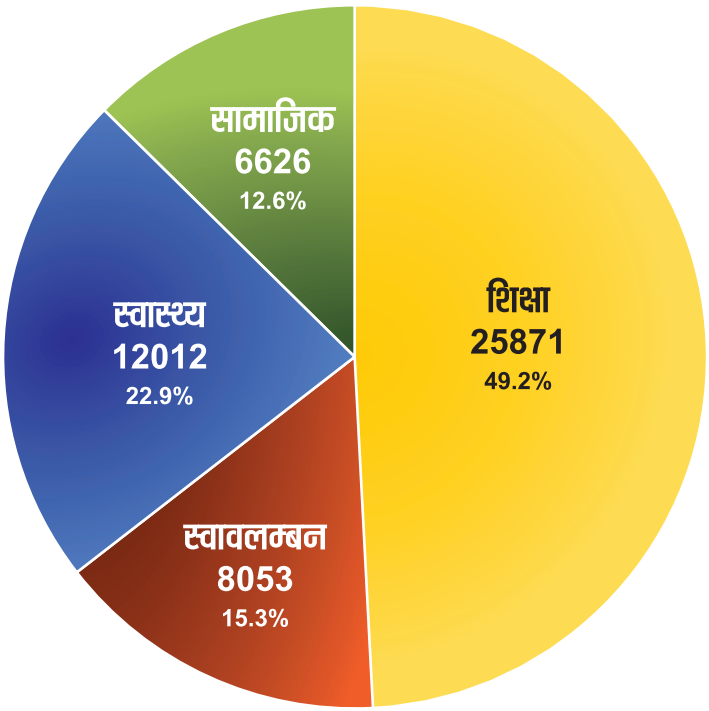

क्षेत्रानुसार कुल सेवा कार्य

क्र.सं.	क्षेत्र	शिक्षा	स्वावलम्बन	स्वास्थ्य	सामाजिक	कुल
01.	दक्षिण	2900	1395	690	1163	6148
02.	दक्षिण मध्य	5198	559	831	1668	8256
03.	पश्चिम	3475	556	4658	685	9374
04.	मध्य	3426	716	1306	1601	7049
05.	उत्तर पश्चिम	2982	201	554	339	4076
06.	उत्तर	1238	552	314	304	2408
07.	पश्चिम उत्तरप्रदेश	1152	334	650	360	2496
08.	पूर्वी उत्तरप्रदेश	1396	297	177	274	2144
09.	उत्तर पूर्व	1563	1568	83	55	3269
10.	पूर्व	1083	1193	315	107	2698
11.	असम	1458	682	2434	70	4644
कुल नियमित सेवा कार्य		25871	8053	12012	6626	52562
सेवा गतिविधियाँ		4110	3023	17282	45965	70380
कुल सेवा		29981	11076	29294	52591	122942

क्षेत्रानुसार नियमित सेवाकार्य

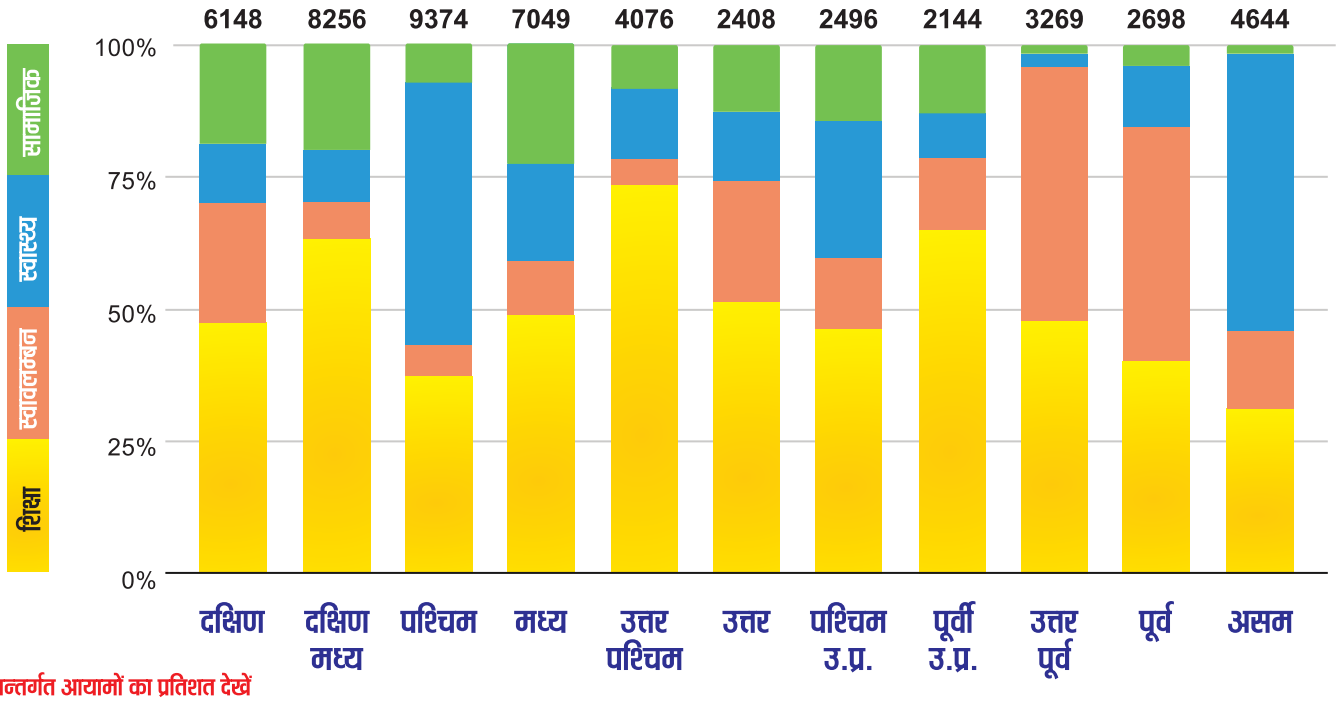

क्षेत्रान्तर्गत आयामों का प्रतिशत देखें

स्थानानुसार सेवा कार्य व्याप

नगरीय और ग्रामीण क्षेत्र सेवा कार्य

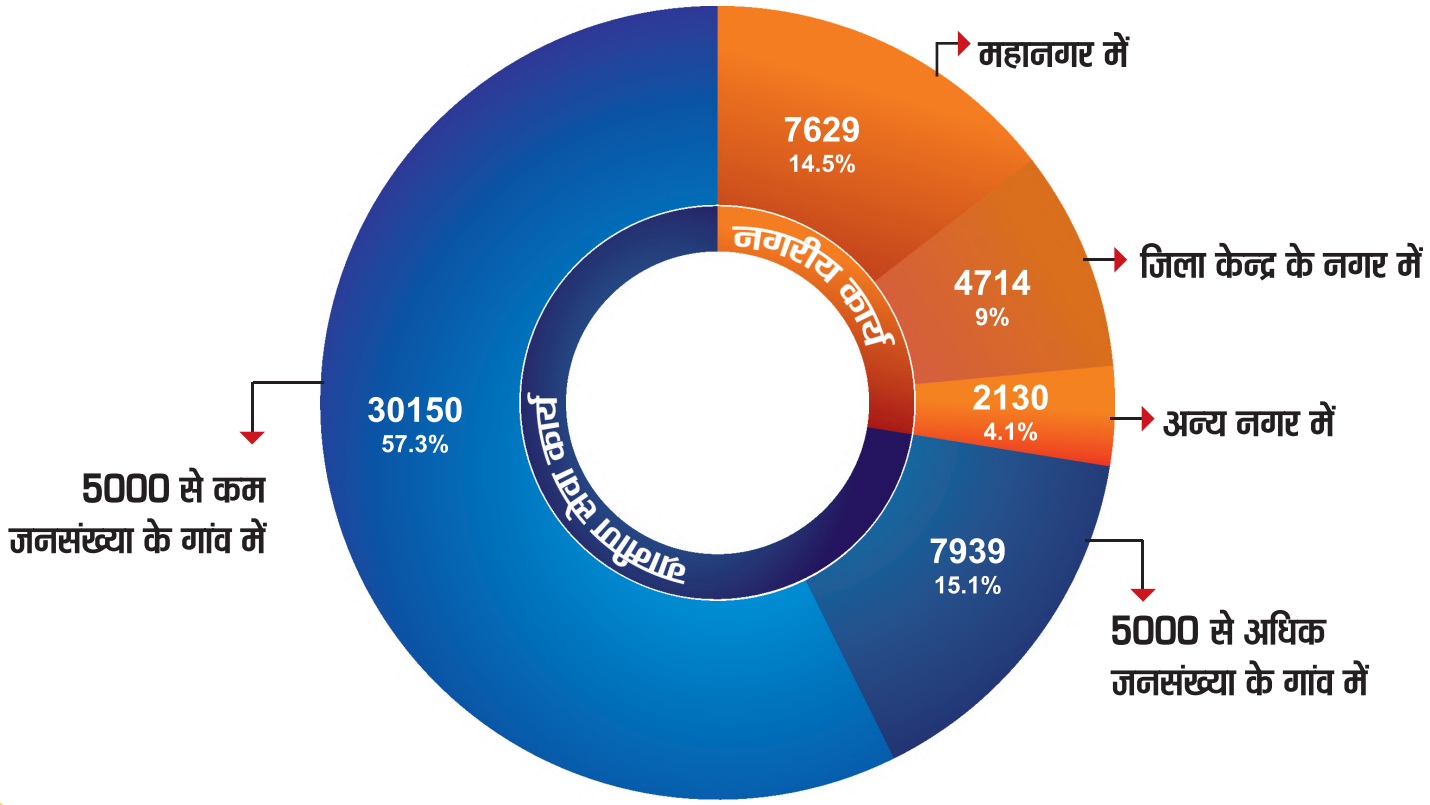

स्थानानुसार सेवा कार्य

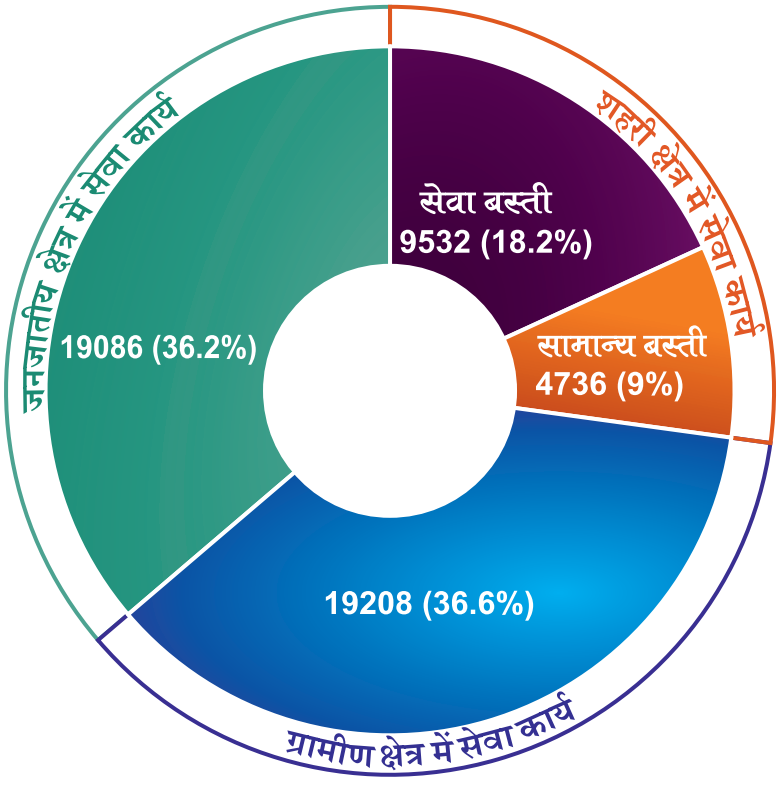

वनवासी कल्याण आश्रम

Website: www.kalyanashram.org

तू-मैं एक रक्त

भारत विविध प्रकृति वाली अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत की भूमि है। यह सैकड़ों जनजातियों की भूमि भी है। हमारे देश में कुल जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत जनजाति है, जो व्यावहारिक रूप से हरियाणा, पंजाब और दिल्ली को छोड़कर सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में फैली हुई हैं। ठक्कर बप्पा (गांधीवादी नेता) की प्रेरणा से, वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना श्री रमाकांत केशव देशपांडे उपाख्य वनयोगी बालासाहेब देशपांडे द्वारा 26 दिसंबर 1952 को मध्य प्रदेश के जशपुर (वर्तमान में छत्तीसगढ़ में) नगर में स्थानीय जनजातियों के 13 बच्चों के लिए एक छात्रावास के साथ शुरुआत की।

इस अवधि के दौरान जनजातियों के कल्याण के लिए विभिन्न परियोजनाओं की सफलता से उत्साहित होकर, 1978 से, वनवासी कल्याण आश्रम ने भारत के हर जनजाति आबादी वाले राज्य में अपना काम बढ़ाया। कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त छात्र, कामकाजी व्यक्ति, सेवानिवृत्त व्यक्ति आदि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, आर्थिक विकास, संवैधानिक अधिकारों, खेल, श्रद्धा जागरण, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में जनजातियों के लिए विभिन्न परियोजनाओं के लिए समर्पित भाव से सेवाकार्य कर रहे हैं।

उद्देश्य

- सामाजिक एकीकरण के माध्यम से मुख्यधारा के भारतीय समुदाय और उनके जनजाति बन्धुओं के मध्य की दूरी को मिटाना।
- आवासीय शिक्षा सहित औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जनजातियों को शिक्षित करना।
- जनजातियों को विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में जहां औपचारिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं; स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना।
- जनजातियों को विशेष रूप से उनके पारंपरिक खेलों में उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए सुविधाएं प्रदान करना।
- जनजातियों को उनकी पारंपरिक आजीविका के साथ-साथ नए और वैकल्पिक आजीविका क्षेत्रों में कौशल वृद्धि के माध्यम से आर्थिक रूप से ऊपर उठाना।
- जनजातियों को उनके संवैधानिक अधिकारों, उनके लिए उपलब्ध सरकारी कल्याण योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करके सशक्त बनाना।
- जनजाति महिलाओं को सशक्त बनाना।
- जनजातियों की आस्था, संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों को मजबूत करना।
- जनजातियों के कल्याण और सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर अनुसंधान एवं विकास और नीति नियोजन करना।

वनवासी कल्याण आश्रम : सेवा आयाम

छात्रावास, माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, पूर्व प्राथमिक विद्यालय, एकल विद्यालय, बालवाड़ी, बाल संस्कार केन्द्र, रात्रि पाठशाला, कोचिंग क्लास, पुस्तकालय-वाचनालय, कृषि विकास केन्द्र, कौशल विकास केन्द्र, स्वयं सहायता समूह, चिकित्सा केन्द्र, आरोग्य रक्षक, चल चिकित्सालय, खेलकूद केन्द्र, श्रद्धा जागरण केन्द्र, महिला समूहों के साथ कार्य, जनजाति के अधिकारों की सुरक्षा के लिए हित रक्षा कार्य, ग्राम विकास कार्य, नगरीय क्षेत्र में सेवा प्रकल्प, शहरी जनजाति सम्पर्क, जनजाति कल्याण सम्बन्धी साहित्य प्रचार एवं प्रचार-प्रसार एवं प्रकाशन आदि। ■

वनवासी कल्याण आश्रम : कार्य व्याप्ति

कुल जिले	785
जनजाति जिले	484
कार्य युक्त जनजाति जिले	384
समिति युक्त जिले	349
जनजाति विकास खंड	2557
कार्य युक्त जनजाति विकास खंड	1398
कुल जनजाति गांव	188144
सम्पर्क युक्त जनजाति गांव	61907

आरोग्य भारती

Website: www.arogyabharti.org

स्वस्थ भारत, समृद्ध भारत

आरोग्य भारती स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक अखिल भारतीय सेवा संगठन है। रोग निदान से अधिक रोगों की रोकथाम (Prevention is Better than Cure) पर केन्द्रित इस तंत्र की 2 नवम्बर 2002 को कोच्चि (केरल) में धन्वंतरि जयन्ती के दिन स्थापना हुई। यह संगठन, स्वस्थ जीवनशैली को आधार बनाकर सभी प्रकार के चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में रूचि रखने वाले व्यक्तियों के साथ 24 अलग-अलग विषयों में कार्यरत है। सेवा कार्यों से लेकर शोध करने तक, छोटे कार्यक्रमों से लेकर प्रकल्प विकसित करने तक, सामान्य व्यक्ति से लेकर प्रबुद्ध नागरिकों तक, कार्य को सर्वस्पर्शी रूप देना, प्रशिक्षणात्मक विषयों से गुणात्मक विकास करना, स्वास्थ्य जागरूकता द्वारा उत्साह और सकारात्मक वातावरण निर्माण करना, संगठन की सहज स्वाभाविक प्रक्रिया है। आरोग्य भारती की मान्यता है कि सभी चिकित्सा पद्धतियों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं, वहीं उनकी सीमाएं भी हैं, सभी एक-दूसरे की परस्पर पूरक हैं। इसलिए आरोग्य भारती सभी को सम्मान की दृष्टि से देखती हैं। स्वास्थ्य को सम्पूर्णता में देखना अर्थात् रोग निदान और रोगों के प्रति स्वास्थ्य जागरूकता दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। सभी स्थानीय भाषाओं में साहित्य निर्माण करना, जिससे सामान्य व्यक्ति भी लाभान्वित हो सके, आरोग्य भारती का एक महत्वपूर्ण अंग है ।

सामान्य व्यक्ति स्वस्थ जीवनशैली का अनुसरण करें, अर्थात् प्रकृति आधारित दिनचर्या, ऋतु अनुसार आहार-विहार, अनिवार्य व्यायाम, सकारात्मक चिंतन-चर्चा साथ ही स्वस्थ परिवारों की संख्या में वृद्धि हो, तथा चिकित्सा व्यय कम से कम हो; व्यवहार में पर्यावरण के नियमों का पालन हो; ऐसे कुछ मापदंड आरोग्य भारती के कार्य के प्रभाव के रूप में देखे जाते हैं।

नेशनल मेडिकोज आर्गेनाईजेशन

Website: www.nationalmedicosorganisation.org

स्वास्थ्य सेवा से राष्ट्र सेवा

भारत में मेडिकल और डेंटल कॉलेजों की एलोपैथिक प्रणाली के योग्य डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों का एक अनूठा संगठन है नेशनल मेडिको आर्गेनाईजेशन। इस संगठन की शुरुआत 1977 में हुई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य इसका स्वास्थ्य सेवा से राष्ट्र सेवा के साथ समाज के वंचित वर्गों की सेवा करने के लिए डॉक्टरों एवं मेडिकल छात्रों को संगठित और प्रेरित करना इस नेक काम के लिये डॉक्टरों एवं मेडिकल छात्रों को विकसित करना है। व्यक्तिगत इकाइयों द्वारा ऐसे क्षेत्रों को अपनाकर कुछ अच्छे कार्य करना और इस नेक काम के लिए डॉक्टरों की प्रतिबद्धता को विकसित करना है। NMO बेहतर शिक्षक-छात्र संबंध, चिकित्सकों के चरित्र निर्माण और स्वास्थ्य प्रचार कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से मेडिकल कॉलेजों में एक बेहतर शैक्षणिक वातावरण विकसित करने का प्रयास भी करते हैं। वर्ष में एक बार संस्थान द्वारा असम में धनवन्तरी सेवा यात्रा, जम्मू में कश्यप ऋषि सेवा यात्रा एवं राजस्थान में राणा पुंजा सेवा यात्रा के नाम से यात्रा निकाली जाती है।

समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल (सक्षम)

समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल
सक्षम
पंजीयन क्रमांक - MAH/654/2008(N)
विकलांगों के विकास हेतु समर्पित राष्ट्रीय संगठन

सक्षम भारत, समर्थ भारत

सक्षम का दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति दिव्य गुणों तथा क्षमताओं से सम्पन्न है। अतः दिव्यांगजन समरसतापूर्ण वातावरण का अनुभव करते हुए स्वावलंबन, आत्मसम्मान तथा गरिमा के साथ जीवन यापन कर सकें एवं राष्ट्र के पुनर्निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर सकें, इस उद्देश्य से 20 जून 2008 को नागपुर में सक्षम संगठन की स्थापना की गई। यह एक राष्ट्रीय संगठन है जो दिव्यांगों के सर्वांगीण विकास एवं सशक्तिकरण हेतु समर्पित है। संस्था सभी दिव्यांगजनों तक अपनी पहुँच बनाने के लिए जिला, प्रान्त तथा राष्ट्रीय स्तर पर अधिवेशन, गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का आयोजन करती है। साथ ही खेल, कला, साहित्य, अनुसंधान, युवा एवं महिला इन आयामों में से निरन्तर क्रियाशील है।

उल्लेखनीय प्रकल्प

- माधव नेत्र पेढ़ी, दृष्टिबाधित अध्ययन केन्द्र, सुदर्शन समदृष्टि केन्द्र और रोजगार केन्द्र इत्यादि, नागपुर
- माधव नेत्रालय, नागपुर
- संवेदना प्रकल्प (बहुविकलांगता), लातूर
- अपंग कल्याणकारी संस्था, पुणे
- उत्कर्ष, मुंबई
- ब्रेल सेंटर, गोवा
- श्रवण बाधित पुनर्वसन केन्द्र, हैदराबाद (विजयनगरम)
- कॉक्लिया-पुणे
- दृष्टिबाधित छात्रावास दिल्ली, केरल
- दृष्टिबाधित स्वरोजगार केन्द्र, दिल्ली, तमिलनाडु, केरल
- कौशल विकास केन्द्र, केरल, बेंगलुरु, गोरखपुर।

भारत विकास परिषद्

भारत विकास परिषद्
तमसो मा ज्योतिर्गमय
स्था. 1963

Website: www.bvpindia.com

स्वस्थ, समर्थ, सुसंस्कृत भारत

भारत विकास परिषद् समाज में विभिन्न व्यवसायों व कार्यों में लगे श्रेष्ठतम् लोगों का एक राष्ट्रीय, अराजनैतिक, निःस्वार्थ, समाजसेवी एवं सांस्कृतिक संगठन है। इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य भारतीय समाज का सर्वांगीण विकास करना है। इस विकास में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार का विकास समाहित है। भारत विकास परिषद् का उद्देश्य है समाज के उच्च वर्ग, बुद्धिजीवियों व सुविधा सम्पन्न लोगों में अपने देश के गरीब, असमर्थ, अशिक्षित लोगों के प्रति सेवा-भाव जागृत करना। लेकिन ये सेवा दया भाव के रूप में नहीं बल्कि अपने देश की संस्कृति में बसी सेवा के कर्त्तव्य के रूप में की जाती है।

स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों से प्रेरणा लेकर, उनके जन्म शताब्दी वर्ष 1963 में, समाज के विचारशील, समर्पित एवं उत्साही व्यक्तियों ने भारत विकास परिषद् की स्थापना की।■

राष्ट्र सेविका समिति

Website: www.sevikasamiti.org

सशक्त नारी, समृद्ध भारत

महाराष्ट्र के वर्धा नगर में स्वर्गीय लक्ष्मीबाई केलकर द्वारा 1936 में स्थापित, राष्ट्र सेविका समिति एक अखिल भारतीय महिला संगठन है। अपनी गौरवशाली मातृभूमि, भारतमाता के हित के लिए समर्पण की भावना से कार्य करने वाला हिंदू महिलाओं का संगठन है। इसमें सांस्कृतिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाता है। ऐसे प्रशिक्षण में शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से महिलाओं का विकास करने की प्रयास किया जाता है, ताकि शाखाओं के माध्यम से विकसित होकर वे समाज का नेतृत्व कर सकें। माता तो परिवार की रीढ़ होती है। अन्नपूर्णा, बच्चों का पालनहार, अतिथि सेवा, स्वच्छता, पर्यावरण रक्षा जैसे दायित्व माता एक साथ निभाती है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण भूमिका वह धर्म के क्षेत्र में निभाती है। सांस्कृतिक शिक्षा, धर्माधिष्ठित आचार-विचार, जीवन मूल्य, नैतिकता आदि की शिक्षा एवं रक्षा सिर्फ माता ही करती है। घर की माता ही संस्कृति का प्रवाह, अक्षुण्ण रूप से, पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाती है। अत: समिति

की शाखाओं से मिलने वाले संस्कार, शिक्षा तथा प्रशिक्षण महिलाओं को इस दृष्टि से सक्षम करने का लक्ष्य सामने रखकर ही किया जाता है, ताकि वे अपना परिवार तथा समस्त सम्बन्धित दायित्व साक्षमता से निभा सकें। राष्ट्र सेविका समिति सकारात्मक सामाजिक सुधार के लिए नेत्रत्वकर्ता सदस्य के रूप में समाज में हिन्दू महिलाओं की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करती है। समिति अपने सदस्यों को तीन आदर्श सिखाती है: मातृत्व, कर्तृत्व, नेतृत्व।

सेवासृष्टि

'शिव भावेन जीवसेवा' भारतीय संस्कृति में 'जीव सेवा' जैसे मानवीय गुणों का बहुत उच्च स्तर है। 'सेवा' का अर्थ है अन्य लोगों की आवश्यकताओं का सम्मान करना।

राष्ट्र सेविका समिति जो सेवा कार्य संचालित करती है उनमें बड़ी संख्या में संस्कार केन्द्र, रुग्ण सेवा केन्द्र, तरुणियों के लिए गृहिणी विद्यालय, बाल सुश्रुषा केन्द्र, वाचनालय, स्वयं सहायता समूह, स्वावलम्बन केन्द्र, कम्प्यूटर शिक्षा केन्द्र, सिलाई कढ़ाई केन्द्र आदि हैं। इसके अलावा धार्मिक विभाग के अंतर्गत :- कन्या पूजन, भजन सत्संग केन्द्र, पौरोहित्य प्रशिक्षण, विवाह-संस्कार, सत्यनारायण पूजा, वास्तु पूजा, हवन विधि आदि के प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ, जनजातीय तरुणियों एवं नक्सलवाद व आतंकवाद से पीड़ित परिवारों की तरुणियों के लिए आरोग्य रक्षिका जैसे प्रशिक्षण कार्य भी चल रहे हैं।

प्राकृतिक आपदा में समाज के साथ खड़े रहकर विपदाग्रस्त परिवारों की माता बहनों का आत्मविश्वास जगाने, उन्हें स्वावलंबी बनाने तथा अपने परिवार की रक्षा करते हुए, उन्हें अन्य उपेक्षित लोगों की सहायता करने योग्य बनाने का कार्य सेविकाएं देश भर में सुदूर अंचलों में कर रही हैं।

लेह लद्दाख एवं जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद पीड़ितों तथा अन्य राज्यों के नक्सलवाद पीड़ित परिवारों की बालिकाओं, पूर्वांचल जनजाति क्षेत्रों एवं कुष्ठ रोगियों की स्वस्थ्य बालिकाओं के लिए 15 छात्रावास संचालित करते है। इन बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए साथ ही उन्हें स्नातक और स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्रदान करने के पश्चात् अपनी जन्मभूमि को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। राष्ट्रीय सेविका समिति ने देश की मातृशक्ति को एक नई दिशा प्रदान की है। ■

विद्या भारती : अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

Website: www.vidyabharti.net

शिक्षित भारत, सशक्त भारत

विद्याभारती 1952 से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रही है और युवा पीढ़ी को भारतीय मूल्यों और संस्कृति के अनुसार शिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय मूल्यों और संस्कृति के अनुसार युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए 1952 में उत्तरप्रदेश के गोरखपुर नगर में पहला विद्यालय शुरू किया। उन्होंने इस स्कूल का नाम 'सरस्वती शिशु मंदिर' रखा। अन्य स्थानों पर भी इसी तरह के स्कूल स्थापित होने लगे। 1977 में एक राष्ट्रीय निकाय के रूप में 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' की स्थापना की गई। सभी राज्य स्तरीय समितियां इस विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध हैं।

'एक विद्यालय द्वारा कम से कम एक सेवा कार्य', यह प्रयास विद्या भारती के सामाजिक दायित्व का परिचायक है। इस प्रयास के माध्यम से वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित एवं पीड़ित बस्तियों में अनेक सेवा कार्य प्रारंभ किये हैं।

विद्या भारती का लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास करना है, जिसके द्वारा ऐसी युवा-पीढ़ी का निर्माण हो सके, जो हिंदुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके तथा उसका जीवन ग्रामों, वनों, गिरी-कंदराओं एवं झुग्गी-झोपड़ियां में निवास करने वाले दिन-दु:खी अभावग्रस्त अपने बंधावों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र-जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

सीमा क्षेत्रों में विद्या भारती

भारत का सीमा क्षेत्र पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, चीन एवं बर्मा से जुदा हुआ है। इन 127 सीमा जिलों में सीमा से 40 किलोमीटर के क्षेत्र में विद्या भारती 211 विद्यालय संचालित कर रही है।

जनजातीय क्षेत्रों में विद्या भारती

विद्या भारती भारत के पूर्वोत्तर, झारखंड, ओडिशा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और गुजरात के जनजाति क्षेत्रों में 100 से अधिक स्कूलों में आवासीय सुविधाओं के साथ 1000 से अधिक स्कूल चलाती है। वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा संचालित शहरी छात्रावासों में रहने वाले लगभग 20,000 जनजाति छात्रों को मुफ्त शिक्षा भी प्रदान करती है।

विद्या भारती सैनिक स्कूल

एक नवोन्मेषी कदम के तहत भारत सरकार ने निजी स्कूलों के साथ साझेदारी में 100 आर्मी स्कूल खोलने का निर्णय लिया है। पहले आर्मी स्कूल केवल रक्षा मंत्रालय द्वारा चलाए जाते थे। विद्या भारती के 7 विद्यालयों को 'सैनिक स्कूल' के लिए चुना गया है। विद्या भारती का सैनिक स्कूल, छात्रों को देश की सेवा एवं भारतीय सेना में शामिल होने के लिए तैयार करता है।

सैनिक स्कूल

1. पटना, बिहार
2. समस्तीपुर, बिहार
3. मल्लापाराम्ब, केरल
4. मंदसौर, मध्य प्रदेश
5. नाभा, पंजाब
6. दादरा नगर हवेली, सिलवासा
7. शिकारपुर, यूपी

विश्व हिन्दू परिषद् (विहिप)

Website: www.vhp.org

समरस भारत, समर्थ भारत

विश्व हिन्दू परिषद (VHP) की स्थापना 29 अगस्त, 1964 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ पर्व पर भारत की संत शक्ति के आशीर्वाद के साथ हुई थी। विहिप का उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना, हिन्दू धर्म की रक्षा करना और समाज की सेवा करना है।

विश्व हिन्दू परिषद : सेवा विभाग

विश्व हिन्दू परिषद की मूल प्रकृति सेवा है। सन् 1964 में इसकी स्थापना के पश्चात् शनैः शनैः अपने समाज के प्रति स्वाभाविक प्रेम तथा आत्मीयता के आधार पर विविध प्रकार के सेवा कार्यों का क्रमिक विकास किया गया। मनुष्य शरीर अपने सुख-भोग के लिये नहीं मिला, प्रत्युत सेवा करने के लिये, दूसरों को सुख देने के लिये मिला है इस अवधारणा के आधार पर परिषद समर्पित कार्यकर्ताओं के द्वारा अत्यल्प संसाधनों के बल पर सेवा कार्य संचालित करती है।

उद्देश्य

1. देश के सभी भू-भागों, विशेषकर जनजातीय क्षेत्रों में धर्मांतरण रोकना तथा घरवापसी को प्रोत्साहन देना।
2. सामाजिक समरसता के भाव को परिपुष्ट करना।
3. अशिक्षित, पिछड़े अथवा साधनहीन समाज बांधवों का स्वाभिमान जगाते हुए उन्हें स्वावलम्बी एवं जागरूक बनाना ।
4. जिनकी सेवा की जाती है, धीरे-धीरे वे स्वयं सेवाकार्य करने वाले बनें, यह वातावरण बनाना।

शिक्षा : कुल प्रकल्प संख्या :- 1441

छात्रावास, विद्यालय, बालवाड़ियां, बाल संस्कार केन्द्र, अन्य शिक्षण केन्द्र तथा संस्कार शालाएं संचालित हैं।

स्वास्थ्य : कुल प्रकल्प संख्या :- 69

चिकित्सालय, मोबाइल डिस्पेन्सरी, एम्बूलेंस एवं अन्य चिकित्सा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रकल्प संचालित हैं।

समाज कल्याण : कुल प्रकल्प संख्या :- 171

बाल कल्याण केन्द्र, महिला सहायता केन्द्र, नि:शुल्क भोजन वितरण केन्द्र, वृद्धाश्रम तथा अन्य सामाजिक कार्य संचालित हैं।

आर्थिक क्षेत्र : कुल प्रकल्प संख्या :- 108

सिलाई केन्द्र, कम्प्यूटर केन्द्र, महिला स्वयं सहायता केन्द्र तथा अन्य कार्य चल रहे हैं।

यह सुखद है कि जहां-जहां विगत कुछ वर्षों से परिषद् के द्वारा छात्रावास, विद्यालय तथा अन्य सेवा गतिविधियां संचालित हैं, वहां-वहां प्राय: धर्मांतरण रुका है, समाज-जागरण हुआ है, कार्यकर्ता निर्मित हुए हैं तथा स्वावलम्बन की दिशा में स्वरोजगार आदि की उपलब्धि हुई है।

सफल शुरुआत

1967 में महाराष्ट्र-गुजरात की सीमा पर (मुंबई से गुजरात की ओर 150 किमी. दूरी पर) स्थित गांव 'तलासरी' में जनजातीय छात्रों के लिये एक 'आश्रमशाला' प्रारम्भ की गयी। इसके लिये कल्याण, जिला ठाणे, महाराष्ट्र के तत्कालीन नगराध्यक्ष माधवराव जी काणे ने अपने पद से त्याग पत्र देकर तलासरी जाना तय किया। 40 वर्ष की आयु में राजकीय सेवा से संन्यास लेना, कल्याण जैसा शहर छोड़कर, तलासरी जैसे छोटे गांव में आना, प्रसिद्धि का क्षेत्र छोड़कर सेवा कार्य को अपनाना, अनुकूल क्षेत्र छोड़कर, प्रतिकूल क्षेत्र में आना, मंदिर के शिखर से उतरकर नींव का पत्थर बनना जैसी असाधारण बात माधवराव जी ने की थी।

इसी क्रम में दूसरा छात्रावास सन् 1972 में असम राज्य के डिमाहसाओ जिले के हाफलांग में आरम्भ हुआ। उस समय यातायात संबंधी कठिनाइयों के साथ-साथ असम के जनजातीय विस्तार में प्रवेश करना अत्यंत ही कठिन था। किन्तु बलिया, उत्तर प्रदेश से वहां भेजे गये रामानंद शर्मा ने जनजातीय बालकों की शिक्षा का आधार लेकर 5 बालकों से एक छात्रावास आरम्भ किया। समर्पित कार्यकर्ता रामानंद शर्मा की एकनिष्ठ साधना, परिश्रम तथा सेवाभाव के फलस्वरूप वह छोटा सा पौधा आज बालक एवं बालिकाओं के अलग-अलग छात्रावास तथा 600 विद्यार्थियों के विद्यालय के रूप में विशाल वट वृक्ष बनकर शिक्षा के क्षेत्र में यश प्राप्त कर रहा है।■

दीनदयाल शोध संस्थान

Website: www.dri.org.in

बसता है भारत गांव में

दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना, राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा 1968 में दिल्ली में हुई। दीनदयाल शोध संस्थान सामाजिक-आर्थिक और व्यावहारिक अनुसंधान में संलग्न है। डीआरआई ने ग्रामीण जीवन से जुड़े विभिन्न मुद्दों और विषयों पर शोध किया है।

दीनदयाल शोध संस्थान : सेवा आयाम

कृषि, जल संरक्षण, पशुधन विकास, ग्रामीण उद्यमिता एवं कौशल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार, बच्चों में वैज्ञानिक स्वभाव विकसित करना, उपयुक्त प्रौद्योगिकी की पहचान करना और उसे अपनाना, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन से प्रेरणा लेते हुए, नानाजी ने समग्र दृष्टिकोण वाला यह मॉडल तैयार किया। गांवों को प्रयोगशाला के रूप में, खेतों को टेस्ट ट्यूब की जगह लेने, किसानों और उनके परिवारों को वैज्ञानिक बनाने के साथ, इस सहस्राब्दी के शुरुआती वर्षों में एक अद्वितीय 'आत्मनिर्भरता मॉडल' विकसित किया गया था। शोध संस्थान गोंडा (यूपी), बीड और नागपुर (महाराष्ट्र) और चित्रकूट (यूपी) में अपने प्रमुख कार्यक्रम के माध्यम से मॉडल के रूप में विकसित हुआ है।

नाना जी ने अपने जीवन के 75वें वर्ष में चित्रकूट को कर्मस्थली बनाया। 1990 में ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना की। कक्षा शिशु से लेकर स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई प्रारंभ कर नई शिक्षा पद्धति प्रारंभ की। मध्यप्रदेश का सतना एवं उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के 50 किलोमीटर के परिधि में 500 से अधिक गांव को स्वावलंबी बनाने हेतु अनेक प्रकल्पों की स्थापना की। उनके माध्यम से गरीबी, बेकारी, बीमारी, शिक्षा पर लगाम ग्रामवासियों के सामूहिक प्रयत्न से लगाया एवं हरा-भरा, स्वच्छ, विवाद मुक्त तथा सामाजिक संवेदनशीलता से युक्त गांव खड़ा किया।■

राष्ट्रीय सेवा भारती

Website: www.rashtriyasewabharati.org

नर सेवा, नारायण सेवा

राष्ट्रीय सेवा भारती जागरण, सहयोग, प्रशिक्षण एवं अध्ययन के आयामों के साथ 45 प्रान्तों में लगभग 1000 सम्बद्ध संस्थाओं का संगठन है।

नियमित सेवा कार्य

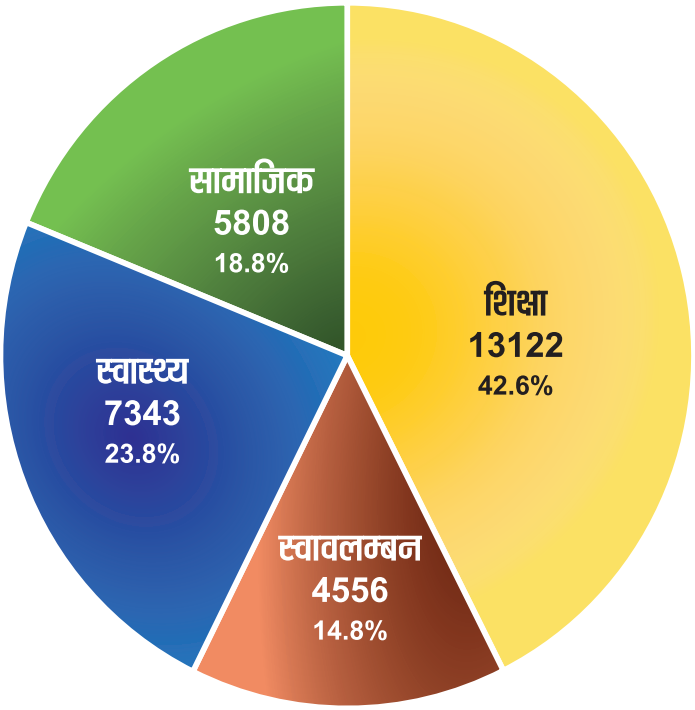

क्र.सं.	क्षेत्र	शिक्षा	स्वावलम्बन	स्वास्थ्य	सामाजिक	कुल
01.	दक्षिण	2159	1379	671	1135	5344
02.	दक्षिण मध्य	4178	471	535	1583	6767
03.	पश्चिम	2722	276	2601	496	6095
04.	मध्य	1051	526	360	1519	3456
05.	उत्तर पश्चिम	684	169	144	266	1263
06.	उत्तर	672	498	228	205	1603
07.	पश्चिम उत्तरप्रदेश	474	296	258	254	1282
08.	पूर्वी उत्तरप्रदेश	369	166	132	174	841
09.	उत्तर पूर्व	228	157	37	49	471
10.	पूर्व	335	76	110	76	597
11.	असम	250	542	2267	51	3110
कुल नियमित सेवा कार्य		13122	4556	7343	5808	30829

क्षेत्रानुसार नियमित सेवाकार्य

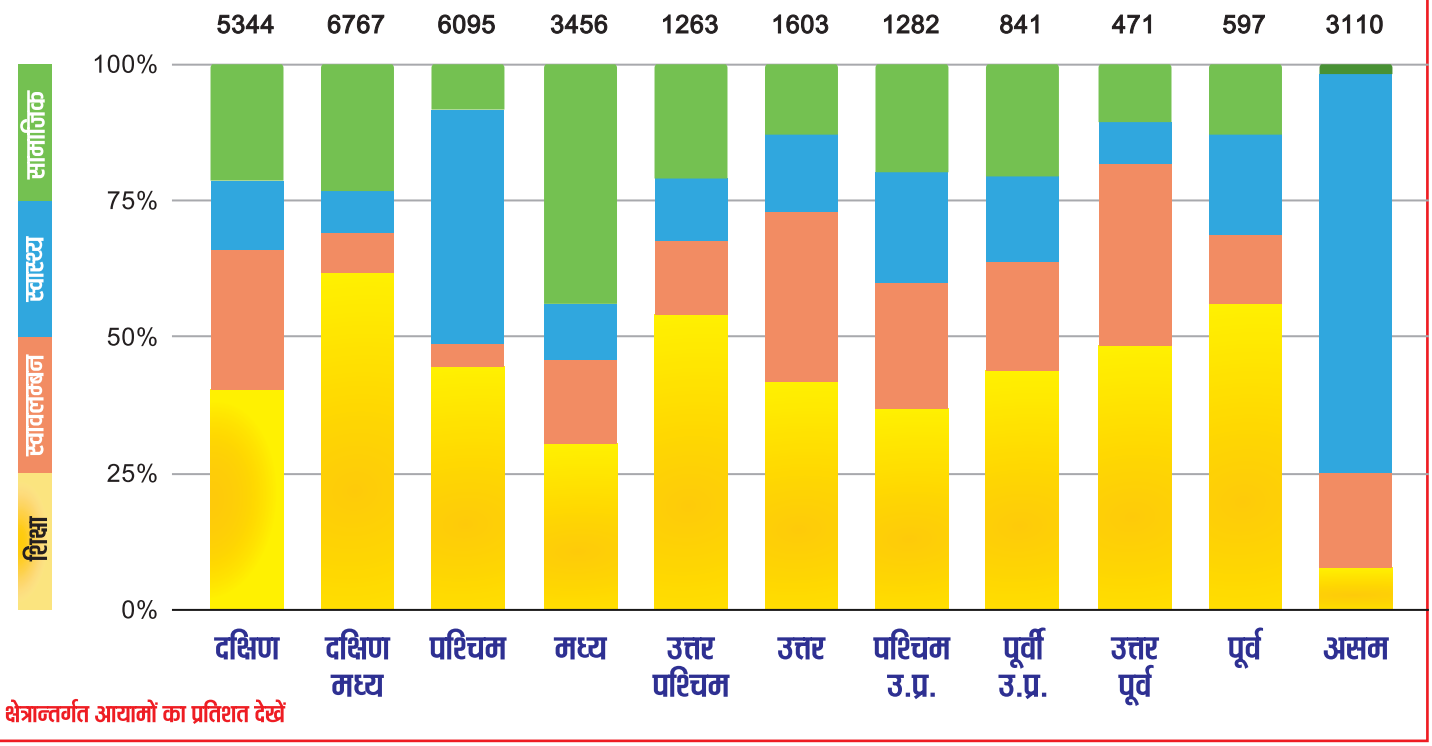

क्षेत्रान्तर्गत आयामों का प्रतिशत देखें

नगरीय एवं ग्रामीण

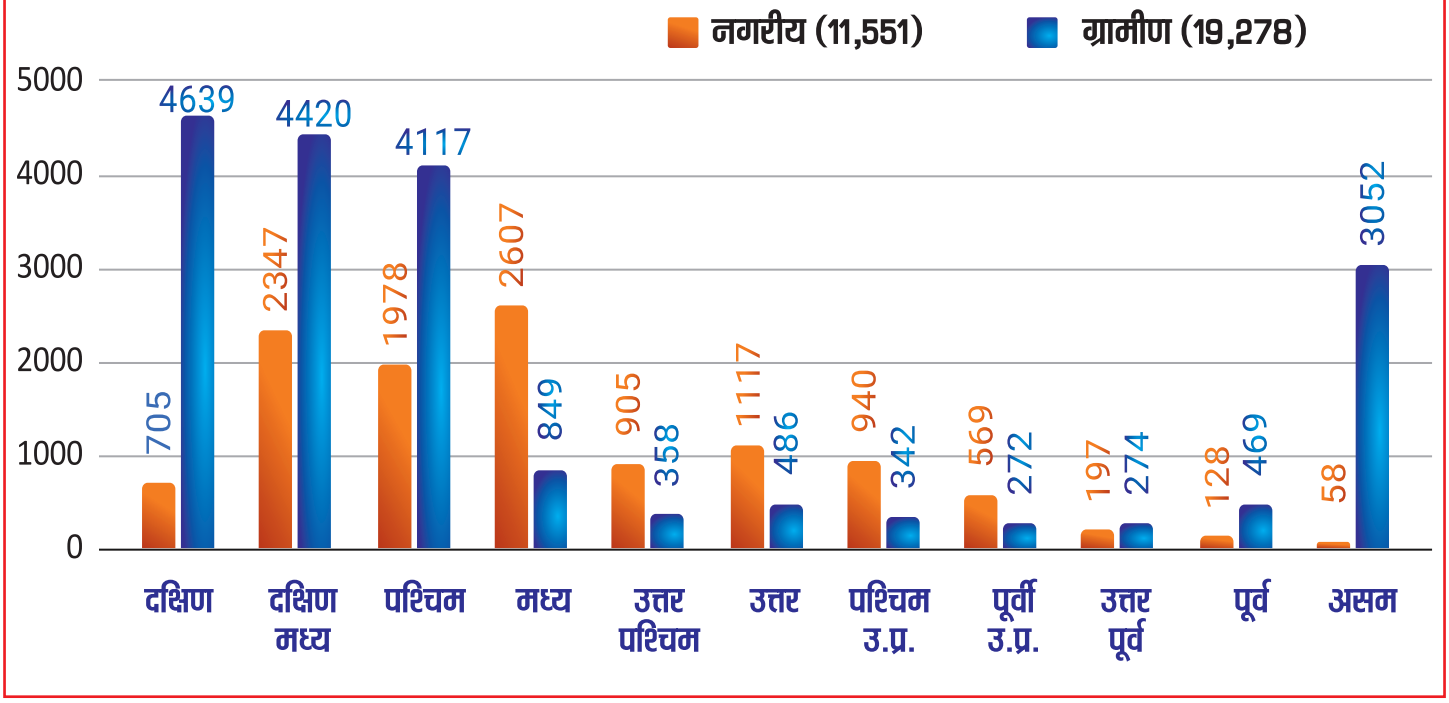

नगरीय एवं ग्रामीण सेवा कार्य

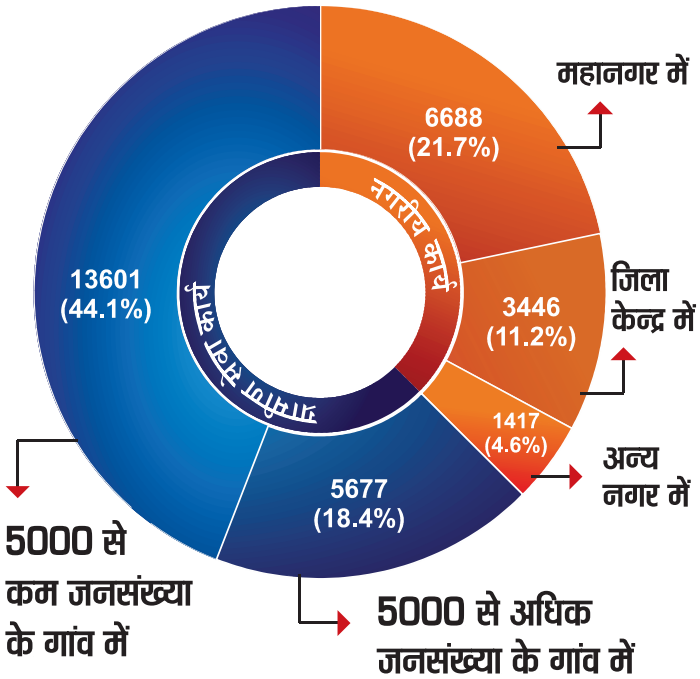

स्थानानुसार सेवा कार्य

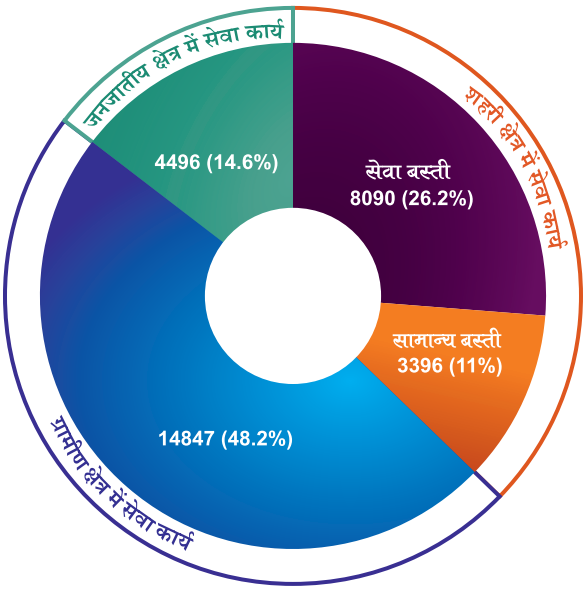

आयाम तथा सेवाकार्यशः संख्या

राष्ट्रीय सेवा भारती

शिक्षा

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	संस्कार केन्द्र/ बाल गोकुलम् / संस्कारशाला	7193
02.	पाठदान केन्द्र / ट्यूशन केंद्र	2540
03.	उच्च शिक्षा कोचिंग	49
04.	अध्ययन केन्द्र /अभ्यासिका	844
05.	बालवाड़ी	192
06.	प्राथमिक शाला (कक्षा 5वीं तक)	193
07.	माध्यमिक शाला (कक्षा 8वीं तक)	181
08.	हाईस्कूल / उच्च माध्यमिक शिक्षा	96
09.	प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग (उच्च शिक्षा हेतु)	27
10.	चलित प्रयोगशाला	237
11.	पुस्तकालय/पुस्तक पेढी बैंक (अध्ययन/संदर्भ पुस्तकें)	137
12.	आवासीय विद्यालय / गुरुकुल	35
13.	हिन्दी शिक्षण वर्ग	7
14.	प्रौढ़ शिक्षा / साक्षरता कार्यक्रम	10
15.	दिव्यांगों के लिए स्कूल	28
16.	छात्रावास	177
17.	निराश्रित बालक बालिका सदन	20
18.	एकल विद्यालय	768
19.	अध्ययन सहायता (वार्षिक शुल्क)	28
20.	अन्य	360
	कुल योग	13122

स्वावलम्बन

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	स्वयं सहायता समूह (वैभवश्री)	2351
02.	सिलाई केन्द्र	1070
03.	सौंदर्य/ मेहंदी प्रशिक्षण केन्द्र	222
04.	स्वास्थ्य परिचारिका, दाई प्रशिक्षण, होम नर्सिंग	5
05.	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	165
06.	प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग (रोजगार हेतु)	10
07.	गोसेवा- पंचगव्य उत्पादन प्रशिक्षण	21
08.	कुटीर उद्योग प्रशिक्षण	18
09.	हस्तकला	272
10.	स्वरोजगार केन्द्र-1 (निर्माण) (राखी, विद्युत लड़ियाँ, सजावट सामग्री आदि)	62
11.	स्व-रोज़गार केन्द्र-2 (सेवाएँ) (विद्युत, नल, ऑटो रिपेयरिंग व फिटिंग आदि)	33
12.	व्यवसाय तथा कौशल प्रशिक्षण	102
13.	ग्रामोद्योग	89
14.	वनौषधि आधारित उत्पादन प्रशिक्षण	23
15.	अन्न और फल प्रक्रिया प्रशिक्षण	21
16.	बीजकोष	14
17.	पूजा/हवन सामग्री निर्माण केन्द्र	14
18.	अन्य	64
	कुल योग	4556

स्वास्थ्य

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	ग्रामीण आरोग्यरक्षक / मित्र/ आरोग्य पेटिका	4385
02.	स्वास्थ्य जागरण केन्द्र	641
03.	चलित चिकित्सालय	384
04	स्थिर चिकित्सालय (O.P.D.) छोटे	375
05.	स्थिर चिकित्सालय (आवासीय) / अस्पताल (बड़े)	36
06.	प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र	22
07.	रुग्ण सहायता केन्द्र	256
08.	न्यूरोथेरेपी, फिजियोथेरेपी, योग थेरेपी, डायलिसिस	112
09.	रक्तकोष/ब्लड बैंक	31
10.	रुग्णवाहिका	123
11.	दिव्यांग सेवा केन्द्र	32
12.	रोगी आवश्यकता केंद्र	325
13.	नेत्र कोष	7
14.	कुष्ठ रुग्ण सेवा केन्द्र	5
15.	योग शिक्षा केन्द्र	267
16.	औषधि केन्द्र	122
17.	नशामुक्ति केन्द्र	10
18.	डायग्नोस्टिक सेंटर	24
19.	अन्य	186
	कुल योग	7343

सामाजिक

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	भजन मंडली	2391
02.	किशोरी विकास केन्द्र	1028
03.	मातृछाया/अनाथ शिशु गृह	28
04.	मातृमंडली / सत्संग	306
05.	दीप पूजा/ हवन (साप्ताहिक)	121
06.	झोला पुस्तकालय / ग्राम, बस्ती प्रेरक	102
07.	अन्नदान केन्द्र	170
08.	महिलाश्रम	16
09.	परिवार / कानूनी परामर्श केन्द्र	69
10.	दाह संस्कार/अंत्यसंस्कार केन्द्र	69
11.	अनाथालय	68
12.	वाचनालय/ पुस्तकालय (सामाजिक)	77
13.	झूलाघर (शिशु पालन केन्द्र)	8
14.	वृद्धजन (डे केयर)सेवा केन्द्र	11
15.	वृद्धाश्रम (आवासीय)	28
16.	कारावास, बालसुधार केन्द्रों में चलने वाले कार्य	1
17.	मानवी दुग्ध कोष	0
18.	संत/यात्रा विश्राम केन्द्र	10
19.	अन्य	1305
	कुल योग	5808

प्रान्तशः नियमित सेवा कार्य

क्षेत्र	प्रान्त	शिक्षा	स्वावलम्बन	स्वास्थ्य	सामाजिक	कुल
दक्षिण	केरल	1437	46	403	416	2302
	दक्षिण तमिलनाडु	433	1311	231	694	2669
	उत्तर तमिलनाडु	289	22	37	25	373
दक्षिण मध्य	कर्नाटक दक्षिण	2301	399	149	520	3369
	कर्नाटक उत्तर	557	14	5	39	615
	आन्ध्र प्रदेश	502	12	324	310	1148
	तेलंगाना	818	46	57	714	1635
पश्चिम	कोंकण	585	42	785	112	1524
	पश्चिम महाराष्ट्र	581	84	483	137	1285
	देवगिरी	65	89	195	92	441
	गुजरात	375	31	648	111	1165
	सौराष्ट्र	125	2	309	22	458
	विदर्भ	991	28	181	22	1222
मध्य	मालवा	436	195	47	373	1051
	मध्य भारत	482	286	256	771	1795
	महाकौशल	37	22	25	52	136
	छत्तीसगढ़	96	23	32	323	474
उत्तर पश्चिम	चित्तौड़	320	90	64	171	645
	जयपुर	221	46	56	86	409
	जोधपुर	143	33	24	9	209
उत्तर	दिल्ली	219	243	97	83	642
	हरियाणा	171	167	34	36	408
	पंजाब	194	40	31	13	278
	जम्मू-कश्मीर	63	35	17	56	171
	हिमाचल	25	13	49	17	104
पश्चिम उ.प्र.	उत्तराखण्ड	118	62	40	38	258
	मेरठ	203	137	69	162	571
	ब्रज	153	97	149	54	453
पूर्वी उ.प्र.	कानपुर	59	52	24	11	146
	अवध	72	17	43	77	209
	काशी	95	31	19	59	204
	गोरक्ष	143	66	46	27	282
उत्तर पूर्व	उत्तर बिहार	27	1	14	24	66
	दक्षिण बिहार	42	3	6	5	56
	झारखण्ड	159	153	17	20	349
पूर्व	पश्चिम ओड़िशा	99	54	59	47	259
	पूर्व ओड़िशा	80	0	14	20	114
	दक्षिण बंग	29	5	10	0	44
	मध्य बंग	92	14	9	4	119
	उत्तर बंग	35	3	18	5	61
असम	उत्तर असम	234	525	2180	50	2989
	अरुणाचल	0	2	6	0	8
	दक्षिण असम	2	7	75	1	85
	मणिपुर	12	4	6	0	22
	त्रिपुरा	2	4	0	0	6
कुल नियमित सेवा कार्य		13122	4556	7343	5808	30829

सभी सेवा कार्यों की कार्यकर्त्ता संख्या

प्रकार	पुरुष	महिला	कुल
मानधन सहित	80,287	1,42,190	2,22,457
स्वयंसेवी	1,54,380	1,49,628	3,04,008
कार्य समितियां	2,05,457	2,86,221	4,91,678
कुल	4,40,104	5,78,039	10,18,143

सेवा के प्रमुख उपक्रम

उपक्रम	उपक्रम संख्या	सेवित जन
शिक्षा सामग्री वितरण	5966	143193
परीक्षा मार्गदर्शन शिविर	1302	33312
फीस सहायता	1141	7350
व्यवसाय प्रशिक्षण शिविर	1091	17691
पंचगव्य व जैविक खाद निर्माण	563	11225
परिचारिका प्रशिक्षण	50	985
रक्तदान शिविर	2003	126927
स्वास्थ्य शिविर	5217	499611
नेत्र जांच शिविर	849	49438
योग शिविर	3016	127735
दिव्यांग शिविर/उपकरण वितरण	224	5079

उपक्रम	उपक्रम संख्या	सेवित जन
प्रथमोपचार प्रशिक्षण	313	7670
व्यसन मुक्ति शिविर	332	29077
सुवर्णप्राशन टीका	452	15800
कन्या पूजन	7578	156681
मंदिर स्वच्छता	15505	-
सार्वजनिक स्वच्छता	6604	-
जल संवर्धन तालाब निर्माण	227	-
सड़क निर्माण	73	-
पौधा वितरण/वृक्षारोपण	6278	-
कम्बल स्वेटर आदि वितरण	2573	83383
अन्नदान/जलपान आदि वितरण	2839	485547

बाढ़ आपदा राहत कार्य, ओड़िशा

अबला बाल वृद्ध रोगी को,
मिले सहारा हम सबका।
निर्बल निरीह और निर्धन को,
हो न कहीं कोई खटका।।

देश के सभी प्रकल्पों में कुल सेवित जन संख्या (2023-24)

सेवित जन	
पुरुष	65,81,420
महिला	62,73,675
बालक	20,72,669
बालिका	2,075,140
कुल सेवित जन	1,70,02,904

इसके अलावा सेवितजनों की संख्या निम्नानुसार है :-

चिकित्सालय (48)	
पुरुष	3,09,388
महिला	2,51,344
बालक	54,076
बालिका	50,814
कुल सेवित जन	6,65,622

छोटे चिकित्सालय-OPD (425)	
पुरुष	6,16,780
महिला	5,66,367
बालक	1,33,178
बालिका	1,41,376
कुल सेवित जन	14,57,701

एक-एक आंसू को पोछें,
सारी पीड़ा लांघना।
चले निरन्तर साधना...

चलित चिकित्सालय (406)	
पुरुष	1,43,452
महिला	1,76,793
बालक	86,204
बालिका	80,520
कुल सेवित जन	4,86,969

दवाई केन्द्र (247)	
पुरुष	1,09,012
महिला	84,527
बालक	13,007
बालिका	14,105
कुल सेवित जन	2,20,651

अन्नदानम् केन्द्र (180)	
कुल सेवित जन	27,45,649

चलित प्रयोगशाला (240)	
बालक सेवित जन	43,371
बालिका सेवित जन	42,420
कुल सेवित जन	85,791

रक्तदान शिविर (2003)	
रक्तदान यूनिट	120927

रुग्ण सहायक सामग्री केन्द्र (344)	
पुरुष सेवित जन	59,777
महिला सेवित जन	25,798
कुल सेवित जन	85,575

45 प्रान्तों से
2628 प्रतिनिधि उपस्थित

497 महिला प्रतिनिधि

2131 पुरुष प्रतिनिधि

872 उपस्थित संस्थाएं

दत्तात्रेय होसबाले
सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

हम लोग विश्व मंगल की मौन साधना करने वाले पुजारी हैं। इस साधना का पहला चरण है भारत को सभी प्रकार से समर्थ बनाना। समर्थ, समृद्ध और स्वाभिमानी भारत ही विश्व शान्ति के लिए गारंटी है। यह हमारा विश्वास है। इसलिए भारत के इस महान चित्र को अपनी आंखों के सामने रखें। भले ही हम अपने छोटे स्थान पर सामान्य काम कर रहे होंगे, लेकिन अपने विचार में हम "Think globally, Act Locally." हों।

महंत उमेशनाथ महाराज
वाल्मिकी आश्रम, उज्जैन

समर्थ भारत के लिए हमारा संकल्प हो कि हम वंचित परिवार के लोगों को, त्याग दिए गए (Adbicated) लोगों को गले लगायेंगे। जैसे मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने निषाद एवं शबरी को गले लगाया। कोई ऊंचा या नीचा नहीं है। ''ईशावास्यमिदगं सर्वम्'' सब ईश्वर के अंश हैं। सबको साथ लेकर गले लगाकर भारत को पुनः विश्व गुरू बनाना है।

सेवा कार्य प्रकार व संख्या समग्र

शिक्षा

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	संस्कार केन्द्र/ बाल गोकुलम् / संस्कारशाला	14226
02.	पाठदान केन्द्र / ट्यूशन केंद्र	3413
03.	उच्च शिक्षा कोचिंग	59
04.	अध्ययन केन्द्र /अभ्यासिका	909
05.	बालवाड़ी	332
06.	प्राथमिक शाला (कक्षा 5वीं तक)	488
07.	माध्यमिक शाला (कक्षा 8वीं तक)	359
08.	हाईस्कूल / उच्च माध्यमिक शिक्षा	209
09.	प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग (उच्च शिक्षा हेतु)	36
10.	चलित प्रयोगशाला	240
11.	पुस्तकालय/पुस्तक पेढी बैंक (अध्ययन/संदर्भ पुस्तकें)	164
12.	आवासीय विद्यालय / गुरुकुल	88
13.	हिन्दी शिक्षण वर्ग	14
14.	प्रौढ़ शिक्षा / साक्षरता कार्यक्रम	13
15.	दिव्यांगों के लिए स्कूल	38
16.	छात्रावास	533
17.	निराश्रित बालक बालिका सदन	23
18.	एकल विद्यालय	4312
19.	अध्ययन सहायता (वार्षिक शुल्क)	42
20.	अन्य	373
	कुल योग	25871

स्वावलम्बन

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	स्वयं सहायता समूह (वैभवश्री)	5258
02.	सिलाई केन्द्र	1330
03.	सौंदर्य/ मेहंदी प्रशिक्षण केन्द्र	276
04.	स्वास्थ्य परिचारिका, दाई प्रशिक्षण, होम नर्सिंग	7
05.	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	202
06.	प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग (रोजगार हेतु)	17
07.	गोसेवा- पंचगव्य उत्पादन प्रशिक्षण	43
08.	कुटीर उद्योग प्रशिक्षण	28
09.	हस्तकला	315
10.	स्वरोजगार केन्द्र-1 (निर्माण) (राखी, विद्युत लड़ियाँ, सजावट सामग्री आदि)	85
11.	स्व-रोज़गार केन्द्र-2 (सेवाएँ) (विद्युत, नल, ऑटो रिपेयरिंग व फिटिंग आदि)	63
12.	व्यवसाय तथा कौशल प्रशिक्षण	143
13.	ग्रामोद्योग	114
14.	वनौषधि आधारित उत्पादन प्रशिक्षण	30
15.	अन्न और फल प्रक्रिया प्रशिक्षण	34
16.	बीजकोष	18
17.	पूजा/हवन सामग्री निर्माण केन्द्र	18
18.	अन्य	72
	कुल योग	8053

स्वास्थ्य

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	ग्रामीण आरोग्यरक्षक / मित्र/ आरोग्य पेटिका	8421
02.	स्वास्थ्य जागरण केन्द्र	798
03.	चलित चिकित्सालय	406
04	स्थिर चिकित्सालय (O.P.D.) छोटे	425
05.	स्थिर चिकित्सालय (आवासीय) / अस्पताल (बड़े)	48
06.	प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र	27
07.	रुग्ण सहायता केन्द्र	277
08.	न्यूरोथेरेपी, फिजियोथेरेपी, योग थेरेपी, डायलिसिस	153
09.	रक्तकोष/ब्लड बैंक	32
10.	रुग्णवाहिका	139
11.	दिव्यांग सेवा केन्द्र	61
12.	रोगी आवश्यकता केंद्र	344
13.	नेत्र कोष	12
14.	कुष्ठ रुग्ण सेवा केन्द्र	6
15.	योग शिक्षा केन्द्र	350
16.	औषधि केन्द्र	247
17.	नशामुक्ति केन्द्र	14
18.	डायग्नोस्टिक सेंटर	34
19.	अन्य	218
	कुल योग	12012

सामाजिक

क्र. सं.	सेवाकार्य प्रकार	संख्या
01.	भजन मंडली	2648
02.	किशोरी विकास केन्द्र	1068
03.	मातृछाया/अनाथ शिशु गृह	37
04.	मातृमंडली / सत्संग	365
05.	दीप पूजा/ हवन (साप्ताहिक)	159
06.	झोला पुस्तकालय / ग्राम, बस्ती प्रेरक	110
07.	अन्नदान केन्द्र	180
08.	महिलाश्रम	22
09.	परिवार / कानूनी परामर्श केन्द्र	77
10.	दाह संस्कार/अंत्यसंस्कार केन्द्र	80
11.	अनाथालय	87
12.	वाचनालय/ पुस्तकालय (सामाजिक)	90
13.	झूलाघर (शिशु पालन केन्द्र)	10
14.	वृद्धजन (डे केयर)सेवा केन्द्र	12
15.	वृद्धाश्रम (आवासीय)	32
16.	कारावास, बालसुधार केन्द्रों में चलने वाले कार्य	3
17.	मानवी दुग्ध कोष	0
18.	संत/यात्रा विश्राम केन्द्र	17
19.	अन्य	1629
	कुल योग	6626

ले चले हम राष्ट्र नौका को भंवर से पार कर